www.ghoonghatkibagawat www.ghoonghatkibagawat ghoonghatkibagawat37@gmail.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित | हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 24 अंक : 44 | गोरखपुर, 18 मई 2025 रविवार | पृष्ठ : 6 | मूल्य : 2

उपराष्ट्रपति ने बताई ऑपरेशन सिंदूर और अमेरिका द्वारा ओसामा बिन लादेन को मार गिराने के बीच समानताएं

नई दिल्ली । उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को ऑपरेशन सिंदूर और पाकिस्तान में अमेरिकी सेना द्वारा ओसामा बिन लादेन को मार गिराने के बीच समानताएं बताईं। पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकानों पर हमलों को भारत द्वारा अब तक का सबसे बड़ा सीमा पार हमला बताते हुए उपराष्ट्रपति ने 11 सितंबर, 2001 को अमेरिका में हुए आतंकी हमलों को याद किया। बिन लादेन का नाम लिए बिना उन्होंने कहा कि 2 मई, 2011 को अमेरिका के अंदर 11 सितंबर के हमलों की योजना बनाने, निगरानी करने और उसे अंजाम देने वाले एक वैश्विक आतंकवादी के साथ अमेरिकी सेना ने इसी तरह निपटा था।



उन्होंने जयपुरिया संस्थानों के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत ने यह कर दिखाया है। दुनिया को यह पता चल गया है। उन्होंने कहा कि एक नया वैश्विक मानक स्थापित किया गया है। शांति की भावना को बनाए रखते हुए, आतंकवाद पर प्रहार करना उद्देश्य रहा है। पहली बार, जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के गढ़ों पर अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार सटीक हमले किए गए। उन्होंने कहा कि हमले इतने सटीक थे कि केवल आतंकवादियों को ही नुकसान पहुंचा।

धनखड़ ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार से वैश्विक समुदाय को एक संदेश दिया था। उन्होंने कहा कि वे खोखले शब्द नहीं थे। दुनिया को अब एहसास हो गया है। उन्होंने यह भी कहा कि पहलगाम आतंकी हमला, जिसमें कम से कम 26 लोग मारे गए, मुंबई आतंकी हमले के बाद नागरिकों पर सबसे घातक हमला था।

न्यूक्लियर धमकी से डरने वाले नहीं : अमित शाह



नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने वावोल में नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन किया। इस दौरान अमित शाह ने हुकांर भरते हुए कहा कि सत्ता संभालने के बाद से ही पीएम मोदी ने आतंकी हमलों का ऐसा मुंहतोड़ जवाब दिया है कि दुनिया हैरान है और पाकिस्तान डरा हुआ है। उन्होंने दावा किया कि इस बार ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी संगठनों के मुख्यालयों को नष्ट कर दिया गया। अमित शाह ने कहा कि हमने 9 ऐसे ठिकानों को नष्ट कर दिया जहां आतंकियों को ट्रेनिंग दी जाती थी और जहां उनके ठिकाने थे। आतंकवादियों को हमारी सेना का जवाब ऐसा था कि उन्होंने पाकिस्तान में 100 किलोमीटर अंदर तक आतंकियों के कैंपों को नष्ट कर दिया। शाह ने साफ तौर पर कहा कि हम न्यूक्लियर धमकी से डरने वाले नहीं हैं। इससे पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भुज वायुसेना अड्डे पर अपने जोरदार संबोधन में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना की सटीकता और गति की सराहना की और कहा कि इस ऑपरेशन ने दुनिया को भारत की सैन्य ताकत का परिचय दिया और सीमा पार से पनप रहे आतंकवाद को रिकॉर्ड समय में कुचल दिया। रक्षा मंत्री ने मात्र 23 मिनट में अपना मिशन पूरा करने के लिए वायु योद्धाओं की प्रशंसा की। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने चेतावनी दी कि पाकिस्तान अपने नागरिकों के कर राजस्व का 14 करोड़ रुपये जैश-ए-मोहम्मद के संयुक्त राष्ट्र द्वारा नामित आतंकवादी नेता मसूद अजहर को वित्त पोषित करने के लिए आवंटित करेगा। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से पाकिस्तान को दी जाने वाली एक अरब डॉलर की वित्तीय सहायता पर तत्काल पुनर्विचार करने का आह्वान किया तथा आगाह किया कि इस सहायता का अधिकांश हिस्सा लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े आतंकवादी बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण में खर्च किया जाएगा।



गोलाबारी के कारण यहां कई घर और व्यावसायिक संपत्तियां क्षतिग्रस्त हुई : मनोज सिन्हा

श्रीनगर । जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सशस्त्र बलों के सदस्यों के साथ बातचीत की। इससे पहले आज उन्होंने तंगधार सेक्टर में सीमावर्ती क्षेत्र का दौरा किया और पाकिस्तान की ओर से सीमा पार से की गई गोलाबारी से हुए नुकसान का आकलन किया। इस दौरान मनोज सिन्हा ने कहा कि पूरी दुनिया ने भारतीय सशस्त्र बलों की बहादुरी देखी है और फिर वो (पाकिस्तान) पूरी दुनिया में गिड़गिड़ाने लगा। हम कभी भी युद्ध के पक्ष में नहीं रहे हैं। हम शांति से रहना चाहते हैं।

मनोज सिन्हा ने कहा कि आज हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और कुछ ही दिनों में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना चाहते हैं। हम विकसित भारत का सपना लेकर आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन हमारा पड़ोसी कर्ज के बल पर मानवता को नष्ट करने पर तुला हुआ है। मुझे लगता है कि दिए गए जवाब से उन्हें सबक मिला होगा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में ऐसा कुछ भी नहीं है जो भारतीय सेना की पहुंच से बाहर हो... मैं फिर से आपके शौर्य, पराक्रम और माँ भारती के प्रति समर्पण को नमन करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि जब भी ऐसा संकट आए तो देश को पता चले कि हमारा देश आप जैसे वीरों के सुरक्षित हाथों में है। भारत माता की जय।

मनोज सिन्हा ने गोलाबारी से हुए नुकसान का आकलन करने के बाद कहा कि प्रतिकूल गोलाबारी के कारण यहां कई घर और व्यावसायिक संपत्तियां क्षतिग्रस्त हुई हैं।

आज मैंने एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के साथ उन जगहों का दौरा किया, स्थिति को अपनी आंखों से देखा और लोगों से बातचीत करके उनकी समस्याओं को समझा। प्रशासन के आकलन के आधार पर, संभव तत्काल सहायता प्रदान की गई है। कुछ लोगों का पुनर्वास किया जाना बाकी है। लेकिन मुझे लगता है कि यह मदद पर्याप्त नहीं है। डिवीजनल कमिश्नर कश्मीर और वरिष्ठ अधिकारी मिलकर हुए नुकसान के लिए एक व्यापक योजना तैयार करेंगे। इसके आधार पर हम भारत सरकार से अनुरोध करेंगे, और बचे हुए लोगों का पुनर्वास करेंगे।

जो दुस्साहस करेगा, उसे सबक सिखाएगा भारत:मोहन भागवत

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को कहा कि भारत दुनिया के सबसे पुराने देशों में से एक है और इसकी भूमिका बड़े भाई की है। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो दुनिया में शांति, सद्भाव और धर्म को बढ़ावा देता है। पाकिस्तान के खिलाफ भारत द्वारा हाल ही में किए गए हमलों का जिक्र करते हुए आर-एसएस प्रमुख ने कहा कि भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है। वे जयपुर के हरमारा स्थित रविनाथ आश्रम में आयोजित सम्मान समारोह में बोल रहे थे।

भागवत ने कहा कि भारत में त्याग की परंपरा रही है। हम भगवान राम से लेकर भामाशाह तक सभी महापुरुषों की पूजा करते हैं जिन्होंने समाज के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शांति और धर्म का संदेश देने के लिए भी शक्तिशाली होना जरूरी है। भागवत ने कहा कि भारत हर क्षेत्र में आगे बढ़ेगा, बढ़ना चाहिए। भारत किसी से दुश्मनी नहीं रखता, लेकिन अगर कोई दुस्साहस करता है, तो भारत उसे सबक सिखाने की ताकत रखता है, ये ताकत भारत में होनी चाहिए। भारत वो काम करता है जो दुनिया में बने रहने के लिए जरूरी है। पाकिस्तान के खिलाफ हाल ही में हुई सैन्य कार्रवाई का जिक्र करते हुए भागवत ने कहा कि भारत किसी के प्रति कोई द्वेष नहीं रखता है। लेकिन दुनिया प्रेम की भाषा तभी सुनती और समझती है, जब आपके पास शक्ति होती है। यह दुनिया का स्वभाव है, जिसे बदला नहीं जा सकता। इसलिए दुनिया के कल्याण के लिए जरूरी है कि भारत शक्तिशाली बने। भागवत ने कहा



कि अब दुनिया ने हमारी ताकत देख ली है। आरएस-एस प्रमुख ने आगे कहा कि विश्व कल्याण हमारा धर्म है। उन्होंने कहा कि यह विशेष रूप से हिंदू धर्म का कर्तव्य है। भागवत के अनुसार यह हमारे ऋषियों की परंपरा थी, जिसे आज संत आगे बढ़ा रहे हैं।

अदालत की अनुमति और कार्यकारी मजिस्ट्रेट की निगरानी में संदिग्ध क्षेत्रों में छापेमारी



श्रीनगर। पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के समकक्ष एसआईए कई स्थानों पर छापेमारी कर रही है। एसआईए ने कश्मीर घाटी में एक बड़ी कार्रवाई की है, जिसमें विभिन्न जिलों में ग्यारह संदिग्ध आतंकी सहयोगियों और ओवर ग्राउंड वर्कर्स (ओजीडब्ल्यू) के घरों पर छापेमारी की गई। इस अभियान में श्रीनगर, गंदेरबल, बारामुल्ला, सोपोर, कुपवाड़ा और हंदवाड़ा शामिल थे। अदालत की अनुमति और कार्यकारी मजिस्ट्रेट की निगरानी में की गई ये छापेमारी क्षेत्र में सक्रिय आतंकी नेटवर्क को खत्म करने के लिए चल रहे प्रयास का हिस्सा थी।अधिकारियों को संदेह है कि लक्षित व्यक्ति पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों के साथ निकट संपर्क में थे, जो घाटी में उनके अभियानों का समर्थन कर रहे थे।

▶ सुरक्षा बलों को मिली बड़ी कामयाबी, लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े तीन आतंकी गिरफ्तार

आतंकी कहीं भी छुपे हों हम उन्हें ढूंढ लेंगे और मार गिराएंगे: मेजर जनरल धंजय जोशी

श्रीनगर। आतंकी नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए जारी प्रयासों में, बडगाम पुलिस ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े तीन आतंकी सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान मुजामिल अहमद, इश्फाक पंडित (दोनों अगलार पट्टन के निवासी) और मुनीर अहमद निवासी मीरीपोरा बीरवाह के रूप में हुई है। गिरफ्तारियां मगाम के कावूसा नरबल इलाके से की गईं। उनकी गिरफ्तारी पर, उनके कब्जे से एक पिस्तौल और एक हथगोला सहित हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया।

पुलिस के मुताबिक इस संबंध में, गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) की संबंधित धाराओं के तहत पुलिस स्टेशन मगाम में मामला दर्ज किया गया है और आगे की जांच शुरू कर दी गई है। इससे पहले आज वरिष्ठ अधिकारियों ने संवाददाताओं को बताया कि भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर के अलग-अलग इलाकों में 48 घंटों के भीतर दो अलग-अलग अभियानों में छह आतंकवादियों को सफलतापूर्वक मार गिराया। इनमें से एक आतंकवादी मार्च में केंद्र शासित प्रदेश में एक सरपंच की हत्या में



शामिल था।

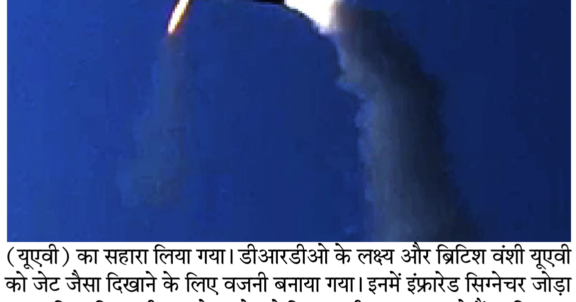
वी फोर्स के जीओसी मेजर जनरल धनंजय जोशी ने संवाददाताओं से कहा, आतंकवादी जहां कहीं भी छिपे हों, हम उन्हें ढूंढ़ लेंगे और उन्हें मार गिराएंगे। उन्होंने कहा कि सेना को 12 मई को केलार के ऊंचे इलाकों में एक आतंकवादी समूह की संभावित मौजूदगी के बारे में सूचना मिली थी। उन्होंने बताया कि अगली सुबह कुछ हलचल देखने पर सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों को चुनौती दी लेकिन उन्होंने जवाब में गोलीबारी की। सुरक्षा बलों ने जल्द ही खतरे को बेअसर कर दिया। त्राल में दूसरा ऑपरेशन सीमावर्ती गांव में चलाया गया।

आकाशतीर वायु रक्षा प्रणाली ने पाक के मिसाइल और ड्रोन हमलों को नाकाम

नई दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर में भारत के स्वदेशी आकाशतीर वायु रक्षा प्रणाली ने पाक के मिसाइल और ड्रोन हमलों को नाकाम किया। यह प्रणाली, शत्रु हमलों का पता लगाकर उन्हें नष्ट करती है। भारतीय वायु सेना ने असली फाइटरों जेट की जगह डमी फाइटर जेट का इस्तेमाल किया।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायु सेना ने दुश्मन के एयर डिफेंस कवच को तोड़ने की ऐसी नायाब तरकीब अपनाई, जिसे इस संघर्ष की बड़ी उपलब्धि के तौर पर हमेशा याद रखा जाएगा। पाकिस्तानी वायु सेना तो शायद ही उन यूएवी को भूल पाएगी, जो फाइटरों की तरह सीमा पर बढ़े थे और उन्हें मार गिराने की फिराक में उसने अपने राडार और एयर डिफेंस का वह नेटवर्क सार्वजनिक दिया, जिसे बड़े जतन से छिपाया हुआ था। ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किए जाने के बाद पाकिस्तान ने जवाब में भारत के 16 सैन्य ठिकानों को निशाना बनाते हुए ड्रोन्स, यूएवी और मिसाइलें लॉन्च की भारत के थी। इसके अगले दिन पाक ने भारत 36 ठिकानों को लक्ष्य करते हुए निशाना बनाया तो जवाबी कार्रवाई में भारतीय वायु सेना ने 7-8 मई की रात को लाहौर समेत उसके 4 एडी राडार को सशस्त्र ड्रोन से हमला करके नष्ट कर दिया।

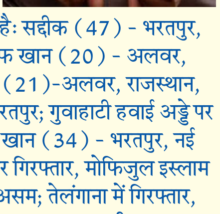
ऑपरेशन सिंदूर में भारत के स्वदेशी आकाशतीर वायु रक्षा प्रणाली ने पाक के मिसाइल और ड्रोन हमलों को नाकाम किया। यह प्रणाली, शत्रु हमलों का पता लगाकर उन्हें नष्ट करती है। भारतीय वायु सेना ने असली फाइटरों जेट की जगह डमी फाइटर जेट का इस्तेमाल किया। इसके लिए अनमँड एरियल व्हीकल्स



(यूएवी) का सहारा लिया गया। डीआरडीओ के लक्ष्य और ब्रिटिश वंशी यूएवी को जेट जैसा दिखाने के लिए वजनी बनाया गया। इनमें इंफ्रारेड सिग्नेचर जोड़ा गया ताकि पाकिस्तानी वायु सेना को लगे कि असली फाइटर आ रहे हैं। पाकिस्तान के मुरीद एयरबेस, सियालकोट, सरगोधा और रहीम यार खान के सामने इन डमी फाइटर जेट की उड़ान भेजी गई। पाकिस्तान ने एचक्यू-9 मिसाइल बैटरियों और राडार नेटवर्क को एक्टिवेट कर दिया। भारतीय वायु सेना ने इस स्थिति का फायदा उठाया। हैरोप ड्रोन्स ने पाकिस्तानी मिसाइल बैटरियों और राडार साइट्स को नष्ट कर दिया। इसके चलते पाकिस्तानी वायु सेना बिना रक्षा कवच के रह गई।

'ऑपरेशन घोस्ट सिम' के तहत सात गिरफ्तार

गुवाहाटी। साइबर अपराध और संदिग्ध राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों पर व्यापक कार्रवाई करते हुए, असम पुलिस ने 'ऑपरेशन घोस्ट सिम' नामक ऑपरेशन के तहत एक परिष्कृत नकली सिम कार्ड रैकेट का पर्दाफाश किया है।



ऑपरेशन घोस्ट सिम अभियान के परिणामस्वरूप सात व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया, जिनकी पहचान इस प्रकार है: सद्दीक (47) - भरतपुर, राजस्थान, आरिफ खान (20) - अलवर, राजस्थान, साजिद (21)-अलवर, राजस्थान, अकीक (25) - भरतपुर; गुवाहाटी हवाई अड्डे पर गिरफ्तार, अरसद खान (34) - भरतपुर, नई दिल्ली हवाई अड्डे पर गिरफ्तार, मोफिजुल इस्लाम (19) - धुबरी, असम; तेलंगाना में गिरफ्तार, जकारिया अहमद (24) - धुबरी, असम

यह घोषणा असम के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) हरमीत सिंह और गुवाहाटी के पुलिस आयुक्त पार्थ सारथी महंत की अगुवाई में एक प्रेस वार्ता के दौरान की गई। जांच में पता चला कि फर्जी सिम कार्ड का इस्तेमाल व्हाट्सएप अकाउंट बनाने के लिए किया जा रहा था, जिसमें वन-टाइम पासवर्ड (ओटीपी) पाकिस्तान भेजे जा रहे थे। हालांकि ये अकाउंट घरेलू लग रहे थे, लेकिन इन्हें विदेशी स्थानों से संचालित किया जा रहा था और कथित तौर पर ये राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पहुंचाने वाली गतिविधियों में शामिल थे। यह ऑपरेशन भारतीय सेना की गजराज मिलिट्री इंटेलिजेंस यूनिट द्वारा दी गई महत्वपूर्ण खुफिया जानकारी के आधार पर शुरू किया गया था, और बाद में स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और असम पुलिस की विशेष शाखा द्वारा कार्रवाई योग्य सुरागों में विकसित किया गया। 14 मई, 2025 को एसटीएफ पुलिस स्टेशन (केस नंबर 02/2025) में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की संबंधित धाराओं को लागू करते हुए एक औपचारिक मामला दर्ज किया गया था। गत 16 मई को पुलिस टीमों ने पांच जिलों में एक साथ छापेमारी की- असम में धुबरी और मोरीगांव, राजस्थान में दो जिले (भरतपुर और अलवर) और तेलंगाना में संगारेड्डी।

नेपाल चीन की गोद में बैठने को बेताब

पिछले दिनों काठमांडू स्थित पाक दूतावास पर सम्मेलन में पाकिस्तान दूतावास के सैन्य सलाहकार कर्नल - मुहम्मद अली अल्वी ने नेपाल और पाकिस्तान के सैनिकों के बीच संबंधों और प्रशिक्षण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि-पाकिस्तानी सशस्त्र नेपाली सेना की क्षमता निर्माण में भविष्य में भी सहयोग करता रहेगा। इतना ही नहीं नेपाल के पूर्व सेना प्रमुख राणा ने यहां तक कहा कि-पाकिस्तानी संस्थानों के माध्यम से नेपाली सेवा की क्षमता को वृद्धि जैसे कार्यक्रम संस्था और इसमें भाग लेने वाले दोनों देशों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। नेपाल में पाकिस्तान के राजदूत अबरार एच. हाशमी ने कहा कि-नेपाल और पाकिस्तान के बीच आपसी संबंध विश्वास और हितों पर आधारित हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि दोनों देशों के बीच वर्तमान सैन्य संबंध भविष्य में और मजबूत होंगे और नई ऊंचाइयों तक पहुंचेंगे। नेपाल प्रतिनिधि सभा के पूर्व सदस्य अभिषेक प्रताप शाह ने कहा कि- नेपाल सरकार को ऐसे आयोजन से बचना चाहिए जो पड़ोसी राष्ट्र की भावनाओं को आहत करता हो। गौरतलब है कि - ओली भारत के विरोध में हो सकते हैं। नेपाल को जनता भी हो ऐसा नहीं है और तमाम सारे विपक्षी दत्ता भी ओली केर सुर में सुर मिलाएं ऐसा भी नहीं है। नेपाल में पाकिस्तानी सैन्य अफसरों की मौजूदगी की निंदा काठमांडू में खूब हुई। तमाम विरोधी दलों के नेताओं ने ओली के इस कदम को गैरवाजिब ठहराया है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि नेपाल चीन की गोद में बैठना चाहता है। बेताब है। भारत-पाक के बीच युद्ध जैसे हालात के दरम्यान चीन की क्या भूमिका थी। लेकिन भारत-चीन के पहले नेपाल कान केवल पड़ोसी बल्कि बड़े भाई जैसा मित्र राष्ट्र है। ओली को इतना जरूर सोचना चाहिए था कि- यदि पाकिस्तान के रमेश अफसरों का नेपाल में प्रशिक्षण जरूरी है तो वह इसे कम से कम भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे फायरिंग के समय तक होल्ड कर सकती थी। सकते थे। नेपाल में कोई भी सरकार हो, सभी कहते हैं कि नेपाल की धरती का प्रयोग भारत विरोधी गतिविधियों के लिए नहीं होगा, लेकिन इस पर अमल नहीं होता है। नेपाल की धरती से छिटपुट आतंकी घटनाओं को नजरअंदाज कर दे तो। 1999 में काठमांडू हवाई अड्डे से आतंकियों द्वारा भारतीय यात्रियों से भरे भारतीय जहाज का अपहरण हो जाना कैसे भूला जा सकता है। हाल के दिनों में भारत नेपाल सीमा से सटे भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुंबिनी से ओली ने शांति, प्रेम और करुणा पर खूब लंबा चौड़ा ज्ञान बांटा। काश, नेपाल के प्रधान मंत्री ओली बुद्ध के दिखाए हुए मार्ग पर घोड़े के समान चलते। पहलगाम आतंकी हमले का प्रभाव देश नेपाल को भी झेलना पड़ा है। बुटवल के एक नागरिक सुदीप न्योपाने को उस हमले में अपनी जान गंवानी पड़ी थी। नेपाली लोग अमूमन किसी अन्य हिल स्टेशन पर नहीं जाते, क्योंकि नेपाल स्वयं एक हिमालयी देश है, जहां की वादियां और पहाड़ कश्मीर सरीखे ही हैं। लेकिन इथर कश्मीर निःसंदेह आतंक मुक्त था इसलिए वहां पर्यटकों की आवाजाही में इजाफा होने लगा था। टूरिस्ट व्यवसाय से जुड़ा हर कश्मीरी खुशहाल हो रहा था। पहलगाम हमले से कश्मीर का टूरिस्ट उद्योग एक कर फिर छिन्न-भिन्न हुआ है। जाहिर है कश्मीर में जो शांति का माहौल था। उससे भारत ही नहीं कि विदेशों के पर्यटक भी प्रभावित हो रहे थे। सुदीप न्योपाने और उनका परिवार भी उसमें से एक था, लेकिन इस परिवार को जो जख्म मिला। वह शायद ही फिर कभी इन्हें कश्मीर की ओर आकार्षित करने में कामयाब हो।

ओली के नेतृत्व वाली हुकूमत ने इस पर दुःख व्यक्त किया और आतंक के खिलाफ भारत के हर कदम पर खड़ा रहने का भरोसा दिया, लेकिन यह कैसा भरोसा था कि जब पहलगाम का बदला लेने केलिए भारत पाकिस्तान को जवाब दे रहा था तब पाकिस्तान के सैन्य अफसर नेपाल में प्रशिक्षण के लिए पहुंच गए।

माना कि पाकिस्तान से नेपाल के रिश्ते भारत जैसे कटु-नही हैं। लेकिन ओली सरकार क्या अपने नागरिकों की हत्या पर पाकिस्तान से जरा भी गुस्सा नहीं हुई। वे कहते है कि-नेपाल सरकार अपनी धरती का इस्तेमाल भारत विरोधी गतिविधियों के लिए कदापि नहीं करने देगा। क्या नेपाल में प्रशिक्षित पाकिस्तान के सैनिक भारत पर फूल बरसाते? भारत के लिए यह घटना चौंकाने वाली हो सकती है कि पाकिस्तान सशस्त्र बलों के विभिन्न संस्थानों में सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके नेपाली सेना के पूर्व सैनिकों का एक सम्मेलन काठमांडू स्थित पाकिस्तान दूतावास में आयोजित लिया गया। इसके पहले पाकिस्तान के 11 सैन्य अफसरों ने नेपाल में 15 मई तक प्रशिक्षण लिया। नेपाली सेना के अनुसार - पाकिस्तान के नेशनल सिक्योरिटी एड वार कॉलेज के ये ।। पाकिस्तानी सैन्य अफसर गत 4 मई को एयर कमोडोर साद मंसूर अंसारी के नेतृत्व में नेपाल आए हैं। ये सभी पाकिस्तानी सैन्य अफसर 15 मई तक प्रशिक्षाण प्राप्त करेंगे।

बचपन का खेल "रस्सी कूदना" एक लोकप्रिय और मजेदार खेल है जिसे बच्चे अक्सर खेलते हैं। यह खेल एक साधारण रस्सी के साथ खेला जाता है, जिसे घुमाकर और उसके ऊपर से कूदकर खेला जाता है



आतंक के विरुद्ध भारत का एक्शन जारी

पहलगाम आतंकी घटना के बाद भारत के वीर जवानों ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान स्थित आतंकी अड्डों को जिस तरह से नष्ट भ्रष्ट किया, विश्वभर में उसका कोई दूसरा उदाहरण सहसा ही स्मरण नहीं आता। आतंकी ठिकानों की विनाश और सैकड़ों आतंकियों के अर्थी एक साथ उठने से बौखलाए पाकिस्तान ने भारतीय शहरों, आम नागरिकों, पूजा स्थलों और सैन्य ठिकानों पर हमले करके जिस अदूरदर्शिता का परिचय दिया उसके बारे में क्या कहा ही कहा जाए।

पाकिस्तानी सेना के हमलों के प्रत्युत्तर में जब वीर भारतीय सैनिकों ने अपने हथियारों का रुख पाकिस्तान की ओर मोड़ा तो तीन ही दिन में पाकिस्तान दया की भिक्षा मांगने लगा। दुनिया में श्रेष्ठ सैनिकों में शामिल भारतीय सैनिकों ने जिस तरह पाकिस्तान के हमलों को कुशलता पूर्वक असफल किया और उसके सैन्य ठिकानों पर अचूक निशाना लगाया है, उससे विश्व की तमाम छोटी–बड़ी शक्तियां अवाक और संज्ञाशून्य की स्थिति में है। दोनों देशों के डीजीएमओ की बातचीत के बाद मौखिक संघर्ष विराम हो चुका है। पाकिस्तान की प्रवृति, चरित्र और इतिहास के आलोक में एक बात स्पष्ट तौर पर जान लीजिए, या गांठ बांध लीजिए, आज नहीं तो कल युद्ध तो होना ही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 मिनट के अपने सटीक, संतुलित और सारगर्भित संबोधन में पाकिस्तान के दुष्ट आचरण और दुष्प्रवृति को समस्त विश्व के समक्ष निरावृत करने में कोई कसर शेष नहीं छोड़ी। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से साहसी भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान को जितनी गहरे घाव दिये हैं, वो उसकी आने वाली संततियों को भी विस्मृत नहीं होंगे। वर्ष 1948, 1965, 1971 और 1999 में पाकिस्तान से हुए युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को इतनी बुरी तरह से नहीं पीटा, जितना ऑपरेशन सिंदूर में उसको क्षति पहुंची है। जितने गहरे घाव उसे इस बार वीर भारतीय सैनिकों ने दिये हैं, वो अगर पूर्व में दिये गये होते तो यह दिन देखने की आवश्यकता नहीं होती। एक दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव में पाकिस्तान हर बार बचता रहा। और हमारे सैनिक चाहकर भी पाकिस्तान को छोड़ते रहे। लेकिन वर्तमान में पीएम मोदी की सरकार ने जिस दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिचय दिया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वो कम ही है।

साहसी भारतीय सेना के हमलों से हो रहे प्रत्यक्ष और संभावित नुकसान के दृष्टिगत पाकिस्तान अपने आका अमेरिका की शरण में गया, लेकिन उसे वहां से भी कोई संतोषप्रद आश्वासन प्राप्त नहीं हुआ। अंततोगत्वा पाकिस्तान के मिलट्री ऑपरेशन के डीजी ने अपने भारतीय समकक्ष से संपर्क साधा। भारतीय सेना ने अपने संकल्पों, नियमों और इच्छा अनुकूल संघर्ष विराम की उद्घोषणा की। संघर्ष विराम का क्रेडिट लेने का भरपूर प्रयास अमेरिका और उसके राष्ट्रपति ट्रम्प ने किया। लेकिन भारतीय सेना की ब्रीफिंग और पीएम मोदी के संबोधन ने अमेरिका के सारे दावों की वायु निकाल दी।

एक प्रसिद्ध कहावत है, चोर चोरी से जाए, हेरा फेरी से न जाए। और पाकिस्तान ही वह चोर है, जो हेरा फेरी से बाज नहीं आएगा। संघर्ष विराम की घोषणा के बाद भी उसके आचरण में अधिक परिवर्तन देखने को नहीं मिला। इसलिए भारत सरकार और पीएम मोदी ने स्पष्ट संदेश पाकिस्तान को दिया है कि भविष्य में आतंक की घटना को युद्ध माना जाएगा।

पाकिस्तान अपने चरित्र के अनुरूप आचरण करेगा, यह मेरा ही नहीं, हर जागरूक नागरिक का अटल विश्वास है। भारतीय नीति और विचार यह है कि हमारे लिए आतंकवाद समाप्त हो जाए तो हमारा संघर्ष और युद्ध समाप्त हो जाएगा। उसे हम अपनी जीत मान लेंगे। लेकिन पाकिस्तान के लिए यह लड़ाई कभी समाप्त नहीं होगी क्योंकि उसका वास्तविक लक्ष्य है भारत को मिट्टी में मिलाना है। उसका जन्म ही भारत से घृणा के आधार पर हुआ है। जब तक भारत है, तब तक पाकिस्तान की लड़ाई है। तो भारत का होना, भारत की उपस्थिति, भारत का अस्तित्व ये पाकिस्तान के लिए जोखिम है। वो इसी जोखिम को समाप्त करने का प्रयास करता रहता है। भारत को मिट्टी में मिलाने के पाकिस्तान ने पहले युद्ध के माध्यम से प्रयास किए। जब उसने यह देखा कि युद्ध में हानि अधिक है, और वह अपने लक्ष्यों का प्राप्त नहीं कर पा रहा है तो उसने छद्म युद्ध शुरू किया। इस छद्म युद्ध के अंतर्गत आतंकवादियों का संरक्षण, प्रशिक्षण देकर भारत में अशांति फैलाने की नीति पर चलना शुरू किया। इसमें कोई बड़ा खर्च भी नहीं है। शस्त्र क्रय करने के लिए उसे धन अमेरिका, यूरोप, तुर्की और चीन दे ही देते हैं। अफगान युद्ध का उसने खूब लाभ उठाया। अमेरिका से उसने पैसा भी लिया, हथियार भी लिए। पहले रूस से लड़ने के लिए, फिर अफगानिस्तान से लड़ने के लिए। अमेरिका को भी धोखा देता रहा। ओसामा बिन लादेन को अपने यहां छुपा कर रखा और अमेरिका को पता नहीं लगने दिया। आखिरकार अमेरिका ने खोज लिया और खोज कर मारा।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि पाकिस्तान किसी को भी धोखा दे सकता है। और भारत को तो हमेशा धोखा ही देगा। पाकिस्तान की एक बात पर हमेशा विश्वास करना चाहिए कि उस पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए। वो हमेशा दगा देखा, हमेशा धोखा देगा। इसलिए वो चाहे कोई भी वायदा करे तब भी उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए कि वो भविष्य में आतंकवाद का साथ नहीं देगा। वो सिर्फ अवसर की प्रतीक्षा करेगा। वर्तमान में जो स्थितियां वहां भारत के हमले के बाद उपजी हैं, उसके चलते पाकिस्तान की सेना और सरकार आमजन में अपनी छवि और साख को बनाए रखने के लिए भारत को नुकसान पहुंचाने में पीछे नहीं हटेगा। ये बात गांठ बांध लीजिए। ये संघर्ष विराम उसे इसीलिए चाहिए था, सांस लेने का अवसर। जो घाव भारतीय सेना ने उसे दिये है, उन पर मरहम पट्टी का अवसर चाहिए था। उसे फिर से तैयारी का अवसर चाहिए था। फिर से आतंकवादी गतिविधियों की रणनीति बनाने का समय और मौका चाहिए था। उसे तीन वस्तुओं की आवश्यकता थी। समय, पैसा और हथियार। और उसको ये तीनों चीजें संघर्ष विराम ही दिला सकता था। और उसे संघर्ष विराम मिल चुका है।

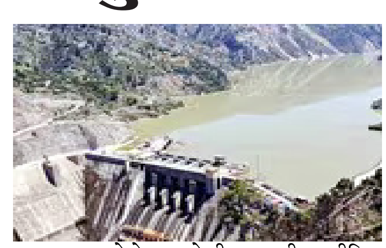
विश्व में पाकिस्तान की ही नहीं, अमेरिका की छवि धोखेबाज देश की है। विश्व भर में उसकी धोखेबाजी के किस्सों की लंबी सूची है। और जहां तक बात भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की है। जब भी दोनों देशों के बीच तनाव होगा, संघर्ष होगा, अमेरिका का झुकाव पाकिस्तान की ओर होगा। अमेरिका को भारत की जरूरत है, चीन पर नियंत्रण के लिए। जब तक ये जरूरत नहीं थी तब तक अमेरिका भारत का विरोध ही करता रहा। मेरा मानना है कि संघर्ष विराम की घोषणा करके भारत अपनी शराफत में मारा गया। भारत अमेरिका पर जरूरत से ज्यादा विश्वास के कारण मारा गया।

यह बात जान लीजिए कि संघर्ष विराम के लिए पाकिस्तान की आतुरता का मुख्य कारण यह था कि उसे लगा कि पहले अपने अस्तित्व को बचाना आवश्यक है। वो उस नीति पर चल रहा था कि बचेंगे, तो भविष्य में लड़ेंगे। तो उसने अपना बचाव कर लिया है। और वह भविष्य में लड़ेगा यह मान कर चलिए। निकट समय में ही आपको किसी ने किसी आतंकवादी घटना का दुखद समाचार सुनने, देखने और पढ़ने को मिलेगा।

पाकिस्तान रुकने वाला नहीं है। वास्तव में जिस दिन पाकिस्तान आतंकवाद रोक देगा, उसके अस्तित्व का औचित्य ही समाप्त हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हमारे सैन्य बल पाकिस्तान के चरित्र से परिचित हैं। इसलिए राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में पीएम मोदी ने तमाम अहम बातों के अलावा यह भी स्पष्ट कर दिया की ऑपरेशन सिंदूर अभी स्थगित ही हुआ है। अर्थात यह कि आतंक के विरुद्ध भारत का एक्शन जारी रहेगा।

वॉटर स्ट्राइक और दुश्मन देश की हिलती नींव

भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर पर पहली बार देश को संबोधित किया और चेतावनी भरे लहजे में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समक्ष स्पष्ट किया कि अब वह दौर नहीं रहा, जब भारत पाकिस्तान द्वारा हमारे निर्दोष नागरिकों का खून बहाए जाने के बाद भी वहां पानी बहने देता था और उससे वार्ता करता था। राष्ट्र के नाम अपने संदेश में उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि टेरर और टॉक एक साथ नहीं चल सकते, टेरर और ट्रेड एक साथ नहीं हो सकता तथा खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते। उनका सीधा इशारा सिंधु जल समझौते की ओर था, जिसे भारत द्वारा पहलगाम हमले के बाद स्थगित कर दिया गया था। प्रधानमंत्री के संदेश के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि दोनों देशों के बीच हुए सीज-फायर के बाद भी उस सिंधु जल संधि पर भारत द्वारा लगाई गई रोक जारी रहेगी, जो पाकिस्तान की जीवन रेखा मानी जाती है। पाकिस्तान के साथ तनाव के इस दौर में 1960 में भारत और पाकिस्तान के बीच विश्व बैंक की मध्यस्थता में संपन्न हुई सिंधु जल संधि



पहलगाम हमले के बाद से ही भारत की कूटनीतिक रणनीति के केंद्र में प्रमुखता से रही है। उल्लेखनीय है कि सिंधु जल संधि के तहत भारत को पूर्वी नदियों सतलुज, ब्यास और रावी का और पाकिस्तान को सिंधु, झेलम और चिनाब का जल उपयोग करने का अधिकार दिया गया था।

संधि के तहत भारत को केवल 20 प्रतिशत जल का उपयोग करने की ही अनुमति मिली थी, जबकि पाकिस्तान को 80 प्रतिशत जल प्राप्त हुआ, वह भी उन परिस्थितियों में, जबकि ये नदियां भारत की भूमि से ही निकलती हैं। यह भारत की उस समय की एकतरफा उदारता ही थी, जिसकी कीमत भारत ने पिछले कुछ दशकों में आतंकवाद, घुसपैठ और सीमा पर लगातार तनाव के रूप में चुकाई है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल भी पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि हम ख्याल रखेंगे कि पाकिस्तान में सिंधु नदी का एक बूंद पानी भी नहीं जाए और इसके लिए जल्द ही नदियों की गाद निकालने का कार्य किया जाएगा, जिससे पानी रोका जाएगा और इसे मोड़ा जाएगा। 2023 की रिपोर्टों के अनुसार भारत अपने हिस्से में मिले जल का भी पूर्ण उपयोग नहीं कर रहा है और कई मिलियन एकड़ फीट जल हर वर्ष पाकिस्तान की ओर बह रहा है। यह वही देश है, जो भारत की भूमि पर हमलों के लिए आतंकी संगठनों को पालता रहा है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत-विरोधी दुष्प्रचार फैलाता है। भारत ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया है कि वह अपने संसाधनों को राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के लिए अप्रत्यक्ष समर्थन नहीं बनने देगा। भारत की नई नीति में जल को केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि एक रणनीतिक हथियार के रूप में देखा जा रहा है। यह वाटर स्ट्राइक है जो बिना हथियार उठाए शत्रु की नींव हिला देने की क्षमता रखती है।

नास्तिकता का प्रतीक है आतंकवाद

भारत ने ऑपरेशन सिन्दूर के तहत आतंक के गढ़ में आतंक को मार गिराया है। ऑपरेशन सिंदूर से कई आतकवादियों का सफाया हुआ है। पाक ने हिन्दुस्तानियों का सुहाग बिगाड़ा तो भारत ने आतंक का संसार ही उखाड़ दिया है। पाकिस्तान, हिन्दुस्तानियों से भविष्य में भय खाएगा और कोई भी घटना को अंजाम देने से पहले अपनी मौत को दावत देगा। पकिस्तान आतंकिस्तान है। पकिस्तान की सेना और आतंकवादी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों इस युद्ध में बराबर की सहभागिता निभा रहे हैं। पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी वहां की सेना का ही एक हिस्सा है जिसे आई एस आई आदि संगठन के नाम से जाना जाता है। पाकिस्तान का नाम आतंकिस्तान होना चाहिए। अब समय आ गया है की पूरे पकिस्तान को ध्वस्त कर विश्व में अमन और चैन स्थापित किया जाए।

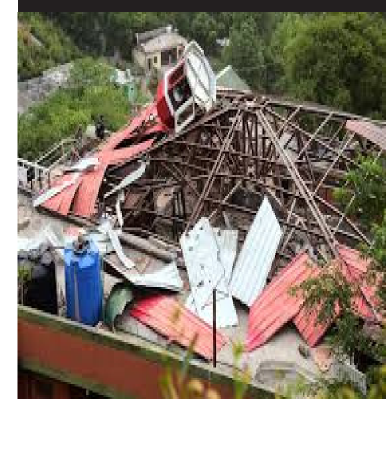
ऑपरेशन सिंदूर में कई आतंकवादी संगठन जैसे जैश, लश्कर, के आतंकवादियों को मार गिराया गया है। इन सभी मारे गए आतंकवादियों को पकिस्तान की सेना ने गॉर्ड ऑफ ऑनर दिया। इससे विश्व में सन्देश जाता है कि पाकिस्तान की पूरी सेना ही आतंकवादी की भूमिका में है। विश्व में स्थायी भविष्य की शान्ति के लिए पाकिस्तान को नेस्तानाबूत ही करना पड़ेगा। ऑपरेशन सिन्दूर कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा 22 अप्रैल 2025 को मारे गए 26 भारतीयों का बदला है। हिन्दुस्तान ने ऑपरेशन सिंदूर से विश्व को आतंक के खिलाफ चेतावनी दे दी है। ऑपरेशन सिंदूर के द्वारा पाकिस्तान की लगभग सभी एयरबेस ध्वस्त हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान आतंक की कमर तोड़ रहा है न की नागरिकों की। भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया। आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिन्दूर ने पाकिस्तान के होश उड़ा दिए हैं। अब कंगाली की दहलीज पर पंहुच चुके पाकिस्तान को अपने रक्षा बजट को 18 फीसदी तक बढ़ाना पड़ा है। पहले से महंगाई की मार झेल रहे पाकिस्तान को भविष्य में बबार्दी का मंजर देखना पड़ेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक कोई बड़ी बात नहीं कि हम जल्द ही पाकिस्तान को टूटते हुए भी देखें। आतंक के आकाओं को समझ लेना चाहिए की अब उनका स्थान पृथ्वी पर न होकर जह्नुम है जहां उनको उनके अनुसार हूर की परियां मिलेंगी।

हिन्दुस्तान की सशक्त महिलाएं विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी ने ऑपरेशन सिंदूर को सफल बनाकर नारीशक्ति की मिसाल को कायम किया है। इनके जज्बे को मेरा सलाम है। आज कुंठित देश आतंकवाद का सहारा लेता है या गलत नीतियों और सिद्धातों का सहारा लेता है। इसलिए जो देश कभी एक हुआ करते थे वो आज एक दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं। आतंकवाद एक विशेष धर्म में ही क्यों पनपा? ये बड़ा प्रश्न है। लोग कहते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, पर मेरा मानना है की आतंकवाद है और आतंक के आकाओं का धर्म मुस्लिम है। इन्हे मुस्लिम आतंकी कहने में कोई हर्ज नहीं है। ये सारेआतंकी पाकिस्तान जैसे मुस्लिम देश में ही क्यों पल रहे हैं? ये आतंकी नमाज भी पढ़ते हैं, मस्जिद भी जाते हैं और मुस्लिम देश में शरण भी लेते हैं तो ये मुस्लिम ही तो हुए। इन आतंक के आकाओं की कमर तोड़ दी जाएगी और भविष्य में ये अपनी जड़ को कमजोर होते देखेंगे। विश्व के सभी मुस्लिम समुदाय के लोगों को आतंकियों को सबक सिखाना पड़ेगा वरना ये आतंकी मुस्लिम, पूरे मुस्लिम समुदाय को बर्बाद कर देंगे। ये आतंकी, मुस्लिम समुदाय के लिए दीमक का काम कर रहे हैं। यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला मुस्लिम देश पाकिस्तान खुद एक दिन अपनी बबार्दी की कहानी लिखेगा।

वहीं दूसरी तरफ देखा जाए तो एक अपना हिन्दुस्तान का मुसलमान है जो राष्ट्र प्रथम और राष्ट्र सर्वोपरि की अभिधारणा पर चलता है। ये भारत के मुस्लिम क्या मुस्लिम नहीं हैं जिनमे प्रेम और सद्भाव कूट कूट के भरा है। कहने का तात्पर्य यह है की कोई देश चाहे तो वो अपने नागरिको को आतंकवादी बना दे या अपने नागरिकों को देवतुल्य बना दे। सारा खेल नागरिकता और वहां की संस्कृति का है। जिस देश की संस्कृति और सभ्यता जैसी होती है वैसे ही वहां का नागरिक भी बन जाता है। कहने का तात्पर्य धर्म से बढ़कर पहले राष्ट्र है। स्वतः के साथ प्रतिस्पर्धा स्व को निर्मित करती है, साथ ही साथ समाज और राष्ट्र को मजबूत करती है। व्यक्ति,समाज और राष्ट्र सभी की प्रतिस्पर्धा स्वयं से होनी चाहिए। प्रकृति, दूसरों से प्रतिस्पर्धा की अनुमति नहीं देती है। प्रकृति हमेशा स्व से जुड़ने की ओर प्रेरित करती है। स्व से जुड़ना ही असली प्रतिस्पर्धा है। एक सफल राष्ट्र की प्रतिस्पर्धा स्वतः से होती है। जैसे बेरोजगारी, महंगाई, खाद्यान, मेडिकल, शिक्षा आदि को लेकर प्रतिस्पर्धा। कहने का तात्पर्य एक सफल राष्ट्र की प्रतिस्पर्धा स्वयं के दृष्टिकोण से होती है जो भारत में है। युद्ध आतंक के सफाए के लिए जरुरी है। आतंक का सफाया विश्व में शांति ले कर आएगा। शांति, विकास का कारण बनती है।

आतंक के खिलाफ युद्ध वैश्विक शांति का कारक है। कहने का तात्पर्य यह है कि पड़ोसी देश पाकिस्तान से जब आतंक का सफया होगा तभी शांति कायम होगी। और वही शांति पड़ोसी मुल्क से मित्रता का कारण बनेगी। आतंक के खिलाफ युद्ध आस्तिकता को प्रकट करती है। आतंकवाद नास्तिकता को प्रकट करती है। आस्तिकता स्वर्ग को प्रकट करती है। नास्तिकता नरक को प्रकट करती है। आस्तिकता स्वर्ग के द्वार को खोलती है। नास्तिकता नरक के द्वार को खोलता है। अतएव आतंकवाद किसी नरक से कम नहीं है। अतएव हम कह सकते हैं कि आतंकवाद, नास्तिकता का प्रतीक है। पाकिस्तान आतंकवाद की आड़ में अपनी विजय पताका लहराना चाहता है। जिस किसी देश ने आतंकवाद को अपने देश में दखलंदाजी करने की सह दी वह देश बर्बाद हो गया। भारत जैसा देश जो आतंकवाद के खिलाफ है वो महान है। आतंकवाद विश्व के भविष्य के लिए चेतावनी है। विश्व के सभी देशों को आतंकवाद के खिलाफ एक होकर लड़ने की जरुरत है। सभी देशों को मिलकर विश्व के स्थाई भविष्य के लिए काम करना चाहिए। भारत पाकिस्तान का यह युद्ध आतंकवाद पर कड़ा प्रहार साबित होगा। अतएव हम कह सकते हैं कि ऑपरेशन सिन्दूर से आतंकवाद की कमर टूटी है और आतंकियों का सफाया हुआ है।

आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिन्दूर ने पाकिस्तान के होश उड़ा दिए हैं। अब कंगाली की दहलीज पर पंहुच चुके पाकिस्तान को अपने रक्षा बजट को 18 फीसदी तक बढ़ाना पड़ा है। पहले से महंगाई की मार झेल रहे पाकिस्तान को भविष्य में बबार्दी का मंजर देखना पड़ेगा।



युद्ध विराम: भारत और पाकिस्तान दोनों अपनी-अपनी सफलता पर प्रसन्न

भारत के चार दिवसीय आपरेशन सिंदूर को लेकर हुए युद्ध विराम की सबसे बड़ी बात यह है कि भारत और पाकिस्तान दोनों अपनी—अपनी सफलता पर प्रसन्न है। दोनों जश्न मना रहे हैं, किंतु इस युद्ध से सबसे ज्यादा लाभ भारत को हुआ है, और सबसे ज्यादा नुकसान युद्ध से दूर खड़े होकर तमाशा देख रहे चीन को। भारत युद्ध में अपने शस्त्रों विशेषकर मिसाइलों की गुणवत्ता और सटीकता को पूरी दुनिया में साबित करने में कामयाब रहा। इससे भारत में बनी रक्षा प्रणालियों और हथियारों को लेकर माँग अब बढ़ेंगी। हालाकि चीन युद्ध में शामिल नहीं था किंतु पाकिस्तान उसके अस्त्र—शस्त्रों के बल पर जंग के मैदान में था। चीन के बने उपकरण पहले ही अपनी निम्न क्वालिटी के लिए प्रसिद्ध थे। इस युद्ध में तो उनके निराशाजनक प्रदर्शन ने और चीन के सामान की शाख मिट्टी में मिला दी। चीन अब सफाई में भले ही यह कह रहा है कि उसके उपकरण सही हैं, पाकिस्तानी सैनिकों पर उन्हें चलाना नही आया। चीन अब कुछ भी सफाई ने किंतु कोई भी देश अब ये मानने को तैयार नहीं कि चीन के शस्त्र किसी काम के हैं। इस चार दिनी युद्ध में सबसे ज्यादा नुकसान चीन को हुआ। चीन अब कुछ भी तर्क दे, कोई भी दावा करे, अब कोई उसकी बात पर यकीन करने वाला नही है। पाकिस्तान वर्तमान में चीन के बनाए हुए एचक्यू-16 और एचक्यू-9 एयर डिफेन्स सिस्टम का इस्तेमाल करता है। एचक्यू-9 जहाँ 125 किलोमीटर तो एचक्यू-16 लगभग 50 किलोमीटर की रेंज वाला एयर डिफेन्स सिस्टम है। पाकिस्तान के लिए चीन ने इसमें बदलाव किए, इसके बावजूद इसका कोई फायदा नहीं हुआ है। ये सिस्टम न तो भारत के द्रोण रोक सके और नहीं मिसाइल। यह एक भी भारतीय मिसाइल, ड्रोन या लोइटेरिंग म्युनिशन नहीं पकड़ पाए। भारत ने तो इन डिफेन्स सिस्टम को ही तबाह कर दिया। चीन ने पाकिस्तान को जेएफ—17 लड़ाकू विमान भी बेचा। पाकिस्तान को इसका भी कोई लाभ न मिल सका। पाकिस्तान ने भारत पर हमले के लिए चीन में बने ड्रोन का भी इस्तेमाल किया था। रिपोट्र्स बताती हैं कि पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ चीन के विंग लूँग और सीएच-।। ड्रोन इस्तेमाल किए थे। इन्हें भी भारत ने सीमा पर ही मार गिराया है। इनमें से कोई भी ड्रोन भारत के किसी टार्गेट को हिट नहीं कर पाया।

हम जानते हैं कि चीन भारत का प्राकृतिक शत्रु देश है। कितना भी कर लें वह भारत का मित्र नहीं हो सकता। वह पाकिस्तान का मित्र देश है और आज पाकिस्तान को शस्त्र देने वाला सबसे बड़ा आपूर्ति करता देश। इतना जानने के बावजूद हम भारतवासी सस्ते के चक्कर में चीन का बना सामान धड़ल्ले से खरीदते हैं। कभी चीन से विवाद के समय ही हमारी देशभक्ति जागती है, वह भी कुछ दिन के लिए और मात्र फेसबुक तक। यदि आधे भारतवासी ही एक साल के लिए चीन के बने सामान का बायकाट कर दें तो चीन घुटनों में आ जाए। कुछ साल के लिए कैलाश मानसरोवर यात्रा से मुंह मोड़कर देखिए। चीन रास्ते पर आ जाएगा।

लगभग 50 के आसपास अरब देश हैं किंतु दो अरब देश तुर्की और अजरबैजान ही इस लड़ाई में पाकिस्तान के साथ पूरी ताकत के साथ खड़े नजर आए। इस लड़ाई में पाकिस्तान ने तुर्की में बने 40 से ज्यादा द्रोण का इस्तमाल किया, हालाकि ये सभी रास्ते में मार दिए गए। 2024 में पर्यटन के लिए 2.75 लाख भारतीय तुर्की गए। 2024 में पर्यटन के लिए 2.5 लाख भारतीय अजरबैजान के बाकू गए। 2022-2024 के दौरान अजरबैजान में भारतीय पर्यटकों के आगमन में 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई, और अजरबैजान में औसत प्रवास समय 4-6 दिन है। तुर्की में भारतीयों का औसत प्रवास 7-10 दिन है। कुल मिलाकर, भारतीय अजरबैजान की अर्थव्यवस्था में सालाना 1,000-1,250 करोड़ रुपये का योगदान करते हैं। भारतीय तुर्की की अर्थव्यवस्था में सालाना 2,900-3,350 करोड़ रुपये का योगदान करते हैं। इस्तांबुल, कप्पाडोसिया और अंताल्या में भारतीयों की सबसे ज्यादा दिलचस्पी है। विदेश में प्रति भारतीय पर्यटक का औसत खर्च प्रति यात्रा ए से सवा लाख रुपये है। चूंकि भारत का मध्यम वर्ग अतिरिक्त आय के साथ 40 करोड़ तक पहुंच गया है, इसलिए सोशल मीडिया और फिल्मों के माध्यम से लोकप्रियता उन्हें तुर्की और अजरबैजान की ओर आकर्षित कर रही है। भारत के कारण, तुर्की और अजरबैजान में 20हजार प्रत्यक्ष पर्यटन नौकरियों का सृजन हुआ। अप्रत्यक्ष नौकरियां 45-60हजार से अधिक हैं। पिछले चार वर्षों में तुर्की के आतिथ्य क्षेत्र में भारतीय निवेश में 35% की वृद्धि हुई है।

अपने दुश्मन देश को लाभ पहुंचाना बंद करने देखिए। सांप और सपोलिए पालना बंद करिए। सब रास्ते पर आ जाएंगे। दुनिया भर के देशों में घूमने के लिए बहुत सी खूबसूरत जगह हैं, सिवाय इन दो देशों के। अगली बार, जब भी यात्रा की योजना बनाएँ, तो इन दो देशों को छोड़ कर कहीं भी चले जाए, ये ज्यादा ठीक होगा। इस चार दिन के भारत और पाकिस्तान के संघर्ष के बाद यह तय हो गया कि दुनिया में भारत के अपने शस्त्रों की विश्वसनीयता बढ़ी है। ब्रह्मोस्त्र की तो पहले ही मांग होने लगी थी। अब और ज्यादा मांग आएगी। भारत का शस्त्रों का बाजार बढ़ेगा। निर्यात बढ़ेगा तो देश की अर्थ व्यवस्था मजबूत होगी। रूस एस—500 बनाने की पहले ही तकनीक भारत को देने को तैयार है। रूस—भारत का विश्वसनीय मित्र है। भारत को चाहिए की समय की मांग को देखते हुए एस—500 का निर्माण अपने यहां शुरू कर दे। राफेल की तरह दुनिया की सबसे श्रेष्ठ तकनीक खरीदे। अमेरिका मात्र शस्त्रों का सौदागर है। वह किसी देश का मित्र नही हो सकता। भारत को चाहिए कि अमेरिका का बिल्कुल विश्वास न करें। इन चार दिनों के युद्ध में रूस और इजराइल भारत के साथ खड़े रहे। अब भारत को समय की जरूरत के हिसाब से नए मित्र बनाने होंगे। अपने को मजबूत करना होगा। तुर्की में भूकंप आने पर भारत 'ऑपरेशन दोस्त' शुरू किया। इसके तहत तुर्की को मेडिकल सहायता भेजी गई। इस ऑपरेशन के तहत एनडीआरएफ की दो टीमें तुर्की भेजीं। इसमें एक डॉग स्क्वॉड भी शामिल था। भारत की रेस्क्यू टीमों ने मलबे में दबे लोगों को खोजने, उन्हें बाहर निकालने में मदद की। ऑपरेशन दोस्त के तहत भारत ने छह विमान और 30 बिस्तरों वाला मोबाइल अस्पताल, मेडिकल सामग्री सहित सभी जरूरी सामान भिजवाए। तुर्किए में भारत का ऑपरेशन दोस्त 10 दिनों तक चला। इसका बदले तुर्की ने पाकिस्तान की किस तरह मदद की। किस तरह शस्त्र भिजवाए, यह हाल में पता चल गया।

अनुमान लगाए जा रहे हैं कि चीन के हथियारों के भारत के खिलाफ फेल होने के बाद अब पाकिस्तान अमेरिका और बाकी पश्चिमी देशों से हथियार खरीदने पर जोर लगाएगा। हालाँकि, उसकी आर्थिक स्थिति को ठीक नही किंतु यह एक हजार साल भी भारत से लड़ने का इरादा रखता है। भले ही उससे दुनिया के आगे भीख मांगनी पड़े। झोली फैलनी पडे।

अमेरिका भारत के विरोध के बावजूद पहले भी पाकिस्तान को युद्ध सामग्री देता रहा है। भात के पुरजोर विरोध के बावजूद उसने पाकिस्तान को एफ—16 विमानों की खेप दी थी। अब चीन से पाकिस्तान का मोहभंग होता देख अमेरिका और मित्र देश पाकिस्तान को अपने खेमें में लेने के लिए कार्य करेंगे।

एक बात और भारत ने पहली बार पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई में चीन से मिले हथियारों का नाम लिया है। भारत ने बताया कि पाकिस्तान ने इन हथियारों का इस्तेमाल भारतीय सेना पर हमला करने के लिए किया था। डीजीएओ एयर मार्शल एके भारती ने सबके सामने पाकिस्तान और चीन की इस सांठ-गांठ के सबूत दिखाए। ये काम तो बहुत पहले से होना चाहिए था। वैसे चीन पर इसका कोई असर होने वाला नहीं है। उसका ध्येय अपना और अपनी सीमाओं का विस्तार करना है, वह इसमें लगा है। चीन भारत को अपना सबसे प्रबल शत्रु मानता है, वह मानता रहेगा। भारत अपने दुश्मनों की मदद करने में चीन का नाम ले या न लें को फर्क पड़ने वाला नही है।

पाक के हक में चीन की बौखलाहट

भारत को अनेक मोर्चों पर चीन को आडे हाथ लेना होगा, सबसे जरूरी है चीन सामान का बहिष्कार, इस पर सरकार के साथ हमारे उद्योग जगत एवं आम जनता को भी गंभीरता से सोचना होगा। ऐसा करके ही चीन की कमर को तोड़ा जा सकता है, आज दुनिया के अनेक देश चीनी सामान का बहिष्कार कर रहे हैं, हमें भी कठोर कदम उठाने होंगे।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत के सफल ह्यऑपरेशन सिंदूरह्व के बाद चीन बौखला गया है। पाकिस्तान की करारी हार एवं उसे दिये गये सबक को चीन पचा नहीं पा रहा है। चीन-पाक की सदाबहार दोस्ती के उदाहरण बार-बार सामने आते रहे हैं, हाल ही में सैन्य टकराव के दौरान चीन ने प्रत्यक्ष व परोक्ष तौर पर पाकिस्तान का समर्थन ही नहीं किया, बल्कि सैन्य व आर्थिक मदद भी की। ऐसे ही संवेदनशील समय पर चीन ने भारतीय जमीन पर दावेदारी जताने एवं अरुणाचल के 27 स्थानों को चीनी नाम देने की कुचेष्टा की है। उसकी यह नापाक कोशिश भी पाक के साथ खड़े होने का ही प्रयास है। यह ध्यान रहे कि वह अरुणाचल एवं उसके अनेक क्षेत्रों, इनमें आवासीय क्षेत्रों के साथ पहाड़ और नदियां भी हैं, इनको पहले ही चीनी नाम दे चुका है। भारत सरकार ने अरुणाचल के भीतरी स्थानों को नए नाम देने के चीन के निराधार और बेतुके प्रयासों को स्पष्ट रूप से खारिज करते हुए इसकी निन्दा की है। चीन अपनी दोगली नीति, षडयंत्रकारी हरकतों एवं विस्तारवादी मंशा से कभी बाज नहीं आता। वह हमेशा कोई ऐसी कुचेष्टा करता ही रहता है जिससे भारत चीन बॉर्डर पर अक्सर तनाव रहता है। हालांकि भारत ने दो टूक जवाब देते हुए साफ कहा है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है और यह चीनी दुष्प्रचार के सिवाय कुछ नहीं है। चीन की इस हरकत ने यह साफ कर दिया है कि उससे संबंध सुधारने की भारत की तरफ से कितनी ही पहल हो जाए, वह सुधरने वाला नहीं है।

निश्चित ही चीन की ये दकियानूसी हरकतें पूरी तरह से अस्वीकार्य हैं, यह उसके दुस्साहस एवं उच्छृंखलता का द्योतक है। नाम बदलने से इस स्पष्ट और निर्विवाद वास्तविकता को नहीं बदला जा सकता कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य अंग था, है और हमेशा रहेगा। इस तरह की करतूतों, बचकानी एवं बेतूकी हरकतों से भारत को उकसाना चाहता है। इसी नीति के तहत वह भारत के पड़ोसी देशों में अपनी पैठ बना कर पुलों, सड़कों, व्यावसायिक केंद्रों आदि का निर्माण कर भारत की सीमा पर तनाव पैदा करने की भी कोशिश करता रहा है। शायद उसने यह मुगालता पाल लिया है कि ताजा घटनाक्रम से भारत दबाव में आ जाएगा लेकिन भारत अब ऐसे किसी दबाव में न तो आयेगा, बल्कि इनका सक्षम एवं तीक्ष्ण तरीके से जबाव देने में भारत सक्षम है। चीन का अधिक बौखलाहट एवं खीज का बड़ा कारण भारत ने उसके एयर डिफेंस सिस्टम, ड्रोन, मिसाइल आदि की इस कदर पोल खोल कर रख दी कि अब उसके लिए दुनिया के निर्धन देशों को अपने दोयम दर्जे एवं घटिसा किस्म के चीनी हथियार बेचना कठिन होगा। पाकिस्तान ने जिस चीनी मिसाइल का इस्तेमाल किया था, उसे भारत ने नाकाम कर दिया।

चीन यह तो चाहता है कि भारत उसके हितों को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरते, लेकिन खुद उसकी ओर से भारत के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता को लगातार नजरअंदाज करता है। चीन भरोसे लायक देश नहीं है, चीन के प्रति कठोर रवैया जरूरी है। निस्संदेह नाम बदलने जैसी घटनाएं हमें सतर्क करती हैं कि चीन के साथ मैत्री संबंधों के निर्धारण के दौरान हमें सजग, सावधान व सचेत रहना चाहिए। अन्यथा चीन पीठ पर वार करने से नहीं चूकने वाला है। भारत को चीन के साथ अपनी तिब्बत नीति पर भी नए सिरे से विचार करना होगा। पिछले तीसरे साल में चीन ने अरुणाचल प्रदेश के अनेक स्थानों के नाम बदले हैं। चीन अरुणाचल को जांगनान के नाम से दशार्ता है। वहीं इसे तिब्बत के दक्षिणी हिस्से के रूप में होने का दावा करता है। चीन किये गये वायदों एवं समझौतों से पीछे हटता रहा है, चीनी राष्ट्रपति ने दोनों देशों के बीच 1993, 1996, 2005 और 2013 में परस्पर भरोसा पैदा करने वाले समझौतों को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने अपनी सेना को भारतीय दावे वाले इलाकों में अतिक्रमण करने का आदेश दिया। इसी का अंजाम रही जून 2020 में गलवान घाटी जैसी घटना। जिसमें उसके सैनिक गलवान घाटी में घुस आए थे, जिन्हें रोकने में खूनी संघर्ष हुआ। तबसे दोनों देशों के रिश्ते तनावपूर्ण बने हुए हैं। भारत के हिस्से की जमीन पर कब्जा करने के इरादे से वह चोरी-छिपे और चालबाजी से घुसपैठ करने की कोशिशें करता रहता है। चीन की विस्तारवादी नीति भारत सहित सम्पूर्ण एशिया के लिये ही नहीं, पूरे विश्व के लिए बड़ा खतरा है।

चीन भारत की बढ़ती ताकत एवं रूतबे से परेशान है। भारत की बढ़ती आर्थिक और सामरिक ताकत चीन को चुभती रही है, इसलिए वह चोरी, चालाकी और चालबाजी से भारत को कमजोर करने की चालें चलता रहता है। दरअसल, सीमाओं को लेकर नित नए विवादास्पद तथ्य लाना चीन की फितरत में शामिल है। अरुणाचल प्रदेश ही नहीं, अक्साई चिन, ताइवान और विवादित दक्षिण चीन सागर पर भी चीन अपना दावा जताता रहा है। शातिर और चालबाज चीन अरुणाचल के किसी दस्तावेज पर भारत का नाम स्वीकार नहीं करता। कुछ मौकों पर तो वह अरुणाचल को अपने नक्शे में शामिल कर दुनिया के सामने साबित करने की कोशिश कर चुका है कि वह उसका इलाका है। मगर भारत की तरफ से मिले सख्त प्रतिरोध की वजह, सामरिक शक्ति और रणनीतिक सूझ-बूझ से उसे हर बार मुंह की खानी पड़ी है।

भारत को अनेक मोर्चों पर चीन को आडे हाथ लेना होगा, सबसे जरूरी है चीन सामान का बहिष्कार, इस पर सरकार के साथ हमारे उद्योग जगत एवं आम जनता को भी गंभीरता से सोचना होगा। ऐसा करके ही चीन की कमर को तोड़ा जा सकता है, आज दुनिया के अनेक देश चीनी सामान का बहिष्कार कर रहे हैं, हमें भी कठोर कदम उठाने होंगे। भारत ने जब भी पाकिस्तान में पनाह पाए आतंकियों को अंतरराष्ट्रीय आतंकवादियों की सूची में डलवाने का प्रयास किया, चीन संयुक्त राष्ट्र में अपने वीटो का प्रयोग कर उसे रोकने की कोशिश करता रहा है, जबकि पूरी दुनिया आतंकवाद के खिलाफ युद्ध का समर्थन करती रही है। जिससे पता चलता है कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत से दोस्ती का हाथ बढ़ाने तथा व्यापार-कारोबार बढ़ाने की बात करने वाला चीन भारत के प्रति कैसी दुर्भावना रखता है। वह वैश्विक संगठनों व मंचों पर भारत के साथ खड़ा होने का दावा एवं ढोंग ही करता है।

भारत एवं चीन दोनों देशों के बीच संबंधों में आने वाली तल्खी की बड़ी वजह भी चीन की नीयत में खोट, उच्छृंखलता एवं अनुशासनहीनता ही है। चीन ने एक बार फिर अपनी इस हरकत से भारत के प्रति शत्रुता को ही जाहिर किया है। भारत के साथ चीन का बर्ताव हमेशा दोगला एवं द्वेषपूर्ण रहा है। इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि चीन किस तरह पाकिस्तान को भारत के खिलाफ मोहरे की तरह इस्तेमाल करता रहा है। जाहिर बात है कि चीन ने ऐसा न केवल चुनौतीपूर्ण समय में भारत का ध्यान भटकाने के लिये किया है, बल्कि पाकिस्तान के साथ एकजुटता दिखाने के लिये भी किया है। अपनी आर्थिक शक्ति के नशे में चूर अहंकारी चीन अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों को जिस तरह धता बता रहा है, उससे वह विश्व व्यवस्था के लिए खतरा ही बन रहा है। अब यह भी किसी से छिपा नहीं कि वह गरीब देशों को किस तरह कर्ज के जाल में फंसाकर उनका शोषण कर रहा है।

चीन भूल गया है कि अब भारत 1962 वाला भारत नहीं है, यह नया भारत है और आज का भारत चीन को मिट्टी में मिलाने की ताकत रखता है। भारत की रणनीति साफ है, स्पष्ट है। आज का भारत समझने और समझाने की नीति पर विश्वास करता है लेकिन अगर हमें आजमाने की कोशिश होती है तो जवाब भी उतना ही प्रचंड देने में वह समर्थ हैं। भारतीय सेना में सरहदें बदल देने की क्षमता है, दुश्मनों को इरादों को ध्वस्त करने का मादा है इसलिये चीन अपने नक्शे में भले ही छेड़छाड़ करता रहे, लेकिन भारत की भूमि पर कब्जाने की उसकी मंशा अब कभी साकार नहीं होगी।

भारत की वॉटर स्ट्राइक और पाकिस्तान

गत 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा पोषित और प्रेषित आतंकियों ने निर्दोष नागरिकों का धर्म पूछकर नृशंस हत्या की। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने जहां पाकिस्तान को सैन्य मोर्चे पर तबाह कर दिया वहीं, उससे पहले सिंधु जल समझौते को स्थगित करने के फैसले से पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसा दिया है। भारत ने सिंधु जल संधि को ऐसे समय में निलंबित किया है जब पाकिस्तान पहले से ही जल संकट का सामना कर रहा है। पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांत में छह नई नहरें बनाने की योजना भी विवादों में फंसी है। इतिहास के आलोक में अगर बात की जाए तो सिंधु जल समझौते के अंतर्गत भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु घाटी को 6 नदियों में विभाजित करने को लेकर नौ साल तक वार्ता चली और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री रहे जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति अयूब खान के मध्य 19 सितंबर 1960 में सिंधु जल संधि विश्व बैंक की मध्यस्थता से कराची में समझौता हुआ। इस संधि के तहत सिंधु बेसिन की तीन पूर्वी नदियों रावी, ब्यास और सतलुज का पानी भारत को आवंटित किया गया। वहीं तीन पश्चिमी नदियों सिंधु, झेलम और चिनाब के जल का 80 फीसदी हिस्सा पाकिस्तान को आवंटित किया गया। समझौते में जिस तरह से जल का बंटवारा किया गया उससे तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री और सरकार की रीति—नीति का समझा जा सकता है। पीएम नेहरू ने देशहित की बजाय पाकिस्तान के हितों का अधिक ध्यान रखा। यह संधि पाकिस्तान में कृषि और हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट के लिए बहुत अहम है और पाकिस्तान में 80 प्रतिशत सिंचाई के पानी की आपूर्ति इन्हीं नदियों के पानी से होती है। कई शहरों के लिए पेयजल की आपूर्ति भी इस नदी से की जाती है। भारत और पाकिस्तान के बीच 65 साल पहले हुई इस जल संधि के तहत दोनों देशों के बीच नदियों के जल प्रबंधन को लेकर समझौता हुआ था। नदियों को बांटने का ये समझौता कई युद्धों, मतभेदों और झगड़ों के बावजूद 65 वर्षों से अपने स्थान पर यथावत रहा। लेकिन जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए हमले में 26 लोगों के मारे जाने के बाद भारत ने जिन कड़े कदमों की घोषणा की उनमें यह सबसे बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है। भारत द्वारा संधि को निलंबित करना इसकी स्थापना के बाद से पहली बार है, जो सीमा पार आतंकवाद से जुड़ी जल कूटनीति में बदलाव का संकेत है। यह भारत के दृष्टिकोण में बदलाव को दशार्ता है। 2016 में उरी में भारतीय सेना के एक शिविर पर हमले के बाद डेढ़ सप्ताह बाद हुई एक समीक्षा बैठक में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, "खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते हैं।" प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान का इशारा सिंधु जल समझौते की ही ओर था। 2019 में पुलवामा में सुरक्षाबलों पर हमले के बाद केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बयान देते हुए कहा था, सरकार ने पाकिस्तान को पानी के वितरण को रोकने का फैसला किया है। अगस्त 2019 में भारत के तत्कालीन जल संसाधन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा था, ?सिंधु जल संधि का उल्लंघन किए बिना पाकिस्तान को जाने वाले पानी को रोकने के लिए काम शुरू हो गया है। भारतीय सेना से करारी शिकस्त के बाद पाकिस्तान अब पानी को लेकर भारत के सामने गिड़गिड़ाने लगा है। पाकिस्तान की सरकार ने 14 मई को भारत के जल शक्ति मंत्रालय को चिट्ठी लिखकर सिंधु जल समझौते को स्थगित करने को लेकर दोबारा विचार करने की अपील की है। वहीं, एक महत्वपूर्ण बात और भी है कि पाकिस्तान की ये अपील तब की गई जब भारत चिनाब नदी पर बगलिहार और सलाल जलविद्युत परियोजनाओं में फ्लशिंग और डिसिल्टिंग का काम शुरू कर दिया है। पाकिस्तान के जल संसाधन सचिव सय्यद अली मुर्तजा ने भारत को लिखी चिट्ठी में कहा, ?सिंधु जल समझौता स्थगित होने की वजह से पाकिस्तान में खरीफ की फसल के लिए पानी का बड़ा संकट खड़ा हो गया है। पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने 13 मई को कहा कि अगर भारत सिंधु जल संधि को फिर से शुरू नहीं करता है और हमारी तरफ आने वाले पानी को मोड़ने की कोशिश करता है तो दोनों देशों के बीच लागू हुआ संघर्ष विराम खतरे में पड़ सकता है। सिंधु जल संधि पर चर्चा के लिए पाकिस्तान की ये पेशकश उसकी छटपटाहट को साफ दिखा रही है। यह पहली बार नहीं था जब भारत सरकार ने 1960 में दोनों देशों के बीच हुई इस संधि में बदलाव की मांग की थी। दो साल पहले भारत ने पाकिस्तान को इस संबंध में नोटिस भेजा था लेकिन इस नोटिस में सिर्फ 'बदलावों' के बारे में बात की गई थी। हालांकि अगस्त 2024 में भेजे नोटिस में भारत ने बदलावों के साथ-साथ समझौते की 'समीक्षा' करने की भी बात की थी। इसमें 'सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों' का भी उल्लेख किया गया था। इसमें भी भारत की ओर से कहा गया था कि 'सीमा पार से आतंकवाद' इस समझौते के सुचारू रूप से संचालन में बाधा है। लेकिन पाकिस्तान ने इस पर कोई उत्तर नहीं दिया, अब जबकि भारत ने समझौते को स्थगित कर दिया है तो पाकिस्तान घुटनों पर आ गया है। 15 मई को एक कार्यक्रम में संवाददाताओं ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर से जब सिंधु जल समझौते को लेकर प्रश्न किया, तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि यह समझौता अभी निरस्त ही रहेगा। भारत सरकार इस पर पुनर्विचार करने के लिए तैयार नहीं है और इस मामले में पाकिस्तान के साथ बातचीत नहीं होगी।

बलूच विद्रोह : अब पाकिस्तानी सेना के लिए चिंता का विषय



बलूच विद्रोहियों के भीषण हमलों ने पाकिस्तानी सेना को हिलाकर रख दिया है, इस समय पाकिस्तानी फौज मुख्य रूप से भारतीय मोर्चे पर तैनात है. बलूचिस्तान की प्रांतीय राजधानी क्वेटा में सिर्फ.एक दिन में पाकिस्तानी सेना पर छह हमले हुए। पाकिस्तान ने भारत के साथ हाल ही में हुए सैन्य टकराव के कारण बलूचिस्तान से अपनी सेना की टुकड़ियों को काफी संख्या में हटा के पूर्वी सीमा पर तैनात किया। बलूच विद्रोहियों के चल रहे अभियानों और सैनिकों की इस कटौती ने पाकिस्तानी सेना पर अतिरिक्त दबाव डाला. सबसे बड़े विद्रोही संगठन, बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने हेरोफ सैन्य अभ्यास नामक एक अभियान शुरू किया, जिसमें उसने 51 से ज्यादा जगहों पर 71 से ज्यादा समन्वित हमले करने का दावा किया। इछअ ने एक प्रेस बयान में कहा कि उसने कई शहरों पर कब्जा कर लिया है और बलूचिस्तान और सिंध को जोड़ने वाले मुख्य राजमार्ग एन-65 सहित राजमार्गों पर चेक पोस्ट स्थापित किए हैं, और लेवीज पुलिस स्टेशन और एनएडीआरए कार्यालय जैसी कई सरकारी कार्यालयों पर कब्जा कर लिया। ये सुसंगठित हमले स्पष्ट रूप से दशार्ते हैं कि यदि बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना की इकाइयों को अन्य मोर्चों पर तैनात किया जाता है, भले ही थोड़े समय के लिए, बलूचिस्तान पर सरकारी नियंत्रण बहुत कमजोर और विद्रोहियों की दया पर निर्भर हो जाता है। इन व्यापक हमलों के साथ, बलूच विद्रोहियों ने एक बार फिर अपनी पहुंच, क्षमता और जटिल हमलों को समन्वित करने की क्षमता का प्रदर्शन किया। पाकिस्तान के लगभग सभी संघीय और राज्य सुरक्षा और खुफिया बलों की बलूचिस्तान में व्यापक उपस्थिति है। वायु सेना, नौसेना, तटरक्षक बल और पाकिस्तानी सेना, सभी बलूचिस्तान में उपस्थिति बनाए रखते हैं, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण शाखा सेना है। पाकिस्तानी सेना की क्क्रकोर, जिसकी कमान एक लेफ्टिनेंट जनरल के पास होति है, जो दक्षिणी कमान के कमांडर के रूप में भी काम करते है, क्वेटा स्थित सेना कोर मुख्यालय से ऑपरेट करते है और और सीधे पाकिस्तानी सेना प्रमुख को रिपोर्ट करते है। पाकिस्तान वायु सेना (पीएएफ) बलूचिस्तान में चार ठिकानों का संचालन करती है। प्राथमिक बेस क्वेटा में समुंगली है और यह 31वें फाइटर विंग का अड्डा है। पाकिस्तानी नौसेना बलूचिस्तान में अरब सागर पर चार नौसैनिक ठिकानों का संचालन करती है। प्राथमिक बेस पश्चिमी बलूचिस्तान में ग्वादर का गहरे पानी का बंदरगाह है, जो कराची के बाद पाकिस्तान का दूसरा सबसे बड़ा बंदरगाह है। यह बंदरगाह पाकिस्तान तटरक्षक बल की तीसरी बटालियन का भी घर है। तीन छोटे नौसैनिक अड्डे जिवानी, ओरमारा और पसनी में स्थित हैं। पाकिस्तान खुफिया तंत्र भी बलूचिस्तान में हमेशा बड़ी तैनाती बनाये रखता है। इंटर-सर्विस इंटेलिजेंस डायरेक्टोरेट (आईएसआई) रणनीतिक खुफिया जानकारी के साथ-साथ संचालन के लिए जिम्मेदार है और क्वेटा में इसका एक बड़ा हिस्सा है। आईएसआई का संयुक्त सिग्नल इंटेलिजेंस ब्यूरो (जेआईएसबी) सैन्डक में सिग्नल इंटेलिजेंस संग्रह स्टेशन संचालित करता है, जो पश्चिमी सीमा को कवर करता है, और ग्वादर में, जो ओमान की खाड़ी के शिपिंग लेन को कवर करता है। आईएसआई के अलावा, प्रत्येक सेवा में सैन्य खुफिया एजेंसियां हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से एमआई के रूप में जाना जाता है, जो सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। संघीय सरकार के इन बलों के अलावा, पाकिस्तान आंतरिक मंत्रालय बलूचिस्तान पुलिस और प्रांत में फ्रंटियर कोर को नियंत्रित करता है। बलूचिस्तान पुलिस के पास पूरे प्रांत के लिये अधिकार प्राप्त है और अपराध से लड़ने और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए वे जिम्मेदार हैं। बलूचिस्तान कांस्टेबुलरी, जिसे कभी-कभी लेवी के रूप में संदर्भित किया जाता है, प्रांत के दूरदराज के इलाकों में पुलिस को मदद प्रदान करती है। फ्रंटियर कॉर्प्स बलूचिस्तान को प्रांत में बड़ी संख्या में तैनात किया गया है। यह आंतरिक मंत्रालय के तहत एक अर्धसैनिक बल है और प्रांत की सुरक्षा तंत्र में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। पाकिस्तानी नीति निमार्ता, इतनी बड़ी संख्या में बलों को तैनात करने के बावजूद, हमेशा बलूचिस्तान पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने के लिए संघर्ष करते है। वास्तव में, बलूच सशस्त्र समूहों ने हर आयाम में अपनी क्षमताओं को कई गुना बढ़ा लिया है। पिछले कुछ वर्षों में, बलूच विद्रोहियों ने अपनी संचार क्षमताओं और हथियारों में काफी सुधार किया है। विद्रोह की लंबी उम्र और लचीलापन निस्संदेह विद्रोहियों के लिये एक ताकत है, क्योंकि इस वजह से बलूच विद्रोहियों ने पाकिस्तानी सेना के तथाकथित विभिन्न आतंकवाद विरोधी तरीकों के अनुकूल होना और उनका जवाब देना सीख लिया है।

भारतीय सनातन संस्कृति के माध्यम से ही पूरे विश्व में शांति स्थापना संभव

भारत में सनातन हिंदू धर्म तो अनादि एवं अनंत काल से चला आ रहा है परंतु बाद के खंडकाल में भारत में कई अन्य प्रकार के मत पंथ भी विकसित हुए हैं जैसे बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म आदि। भारत में विकसित विभिन्न मत पंथ मूलतः सनातन हिंदू संस्कृति का ही अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं और ऐसा कहा जाता है कि यह समस्त मत पंथ सनातन हिंदू धर्म की विभिन्न धाराएं ही हैं। भारत में विकसित मत पंथ सामान्यतः अपने दर्शन, कर्मकांड एवं सामाजिक ताने बाने के दायरे में अपने धर्म का अनुपालन करते हैं। भारत में हिंदू धर्म के सिद्धांतों पर चलने वाले नागरिकों की संख्या सबसे अधिक हैं एवं यह भारत का सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें विभिन्न देवी देवताओं और पूजा प्रथाओं की एक विस्तृत प्रणाली शामिल है।

भारत में विकसित हुए मत पंथों में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के आधार पर हुई है। यह शिक्षाएं मानव जीवन से दुःख और उसके कारणों को दूर करने के सम्बंध में हैं। बौद्ध धर्म में ध्यान, प्रेम एवं करुणा पर जोर दिया जाता है। बौद्ध धर्म में कर्मकांड के महत्व को भी रेखांकित किया गया है परंतु इसका उद्देश्य ईश्वर की आराधना नहीं बल्कि मोक्ष की प्राप्ति करने से है।

भारत में ही विकसित दूसरे महत्वपूर्ण मत पंथ, जैन धर्म में अहिंसा, आत्म संयम, सत्य एवं ईमानदारी पर अधिक जोर दिया जाता है। जैन धर्म में ऐसा माना जाता है कि मोक्ष की प्राप्ति स्वयं के प्रयासों से ही सम्भव है। भारत में ही विकसित तीसरा महत्वपूर्ण मत पंथ है सिख धर्म जिसकी स्थापना श्री गुरु नानक देव जी ने की थी। सिख धर्म ईश्वर में विश्वास, सेवा, समानता एवं सत्यनिष्ठा पर आधारित है। सिख धर्म में ईश्वर की उपासना की जाती है परंतु यह उपासना कर्मकांड से परे हैं। भारत की सनातन हिंदू संस्कृति को पूरे विश्व में अति प्राचीन संस्कृति के रूप में देखा जाता है। मूल रूप से भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में आध्यात्म का विशेष महत्व है जिसके अंतर्गत वसुधैव कुटुंबकम, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, विश्व का कल्याण हो, किसी भी जीव का अहित न हो जैसे भावों पर अमल करने का प्रयास किया जाता है। भारत में चूंकि मनुष्य के साथ साथ जीव जंतुओं, नदियों, पहाड़ों, पेड़ पौधों एवं जंगलों, आदि में भी ईश्वर का वास माना जाता है इसलिए किसी भी जीव को कोई क्षति न हो इस भावना को न केवल को आगे बढ़ाया जाता है बल्कि इस सिद्धांत पर अमल भी किया जाता है। इसीलिए भारत मूलतः शांतिप्रिय देश माना जाता है तथा भारत में हिंसा के लिए तो कोई जगह ही नहीं है। भारत के धर्मग्रंथों में भी जाने अनजाने में भी की गई जीव हत्या को पाप की संज्ञा दी गई है। सनातन हिंदू संस्कृति के ग्रंथों, उपनिषदों, आदि द्वारा काम, कर्म एवं अर्थ को धर्म के साथ जोड़कर ही सम्पन्न करने के उपदेश दिए जाते हैं।

उदाहरण के लिए, महाभारत में वेद व्यास जी ने धर्म के आठ तरीके बताए हैं - यज्ञ - जिसका आश्य है कि ऐसा कर्म जो समाज के लाभ के लिए किया जाता है। दान - समाज की सहायता करना। तप - अर्थात स्वयं में सुधार करते रहना, स्वयं का मूल्यांकन करना तथा नकारात्मक गुणों को दूर कर सकारात्मक गुणों का विस्तार करना। सत्यम - सत्य के मार्ग पर चलना। क्षमा -दूसरों तथा स्वयं को गलतियों के लिए क्षमा करना। दंभ - इंद्रियों को वश में रखना। आलोभ - लालच नहीं करना एवं लालच



में न आना। अध्ययन - स्वयं और दुनिया का अध्ययन करना। सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायी सामान्यतः धर्म के उक्त वर्णित आठ तरीकों पर चलने का प्रयास करते पाए जाते हैं। धर्म की इस राह पर चलकर उन्हें समाज में शांति पूर्वक रहने की प्रेरणा मिलती है एवं अंततः उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही, विश्व के अन्य देशों में विकसित मत पंथों का अनुसरण करने वाले नागरिक भी भारत में पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं जैसे यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम के अनुयायी, आदि। विश्व के अन्य भागों में विकसित उक्त वर्णित मत पंथों को सेमेटिक रिलिजन की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इनकी साझा उत्पत्ति एवं कुछ सामान्य अवधारणाएं होती हैं, जैसे एक ही ईश्वर में विश्वास, नैतिकता एवं कर्मकांड।

यहूदी धर्म एक धर्मग्रंथ (ताल्मुद) पर आधारित है। इस धर्मग्रंथ में यहूदी लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दशार्या गया है। यहूदी धर्म सेमेटिक धर्म की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें एक ईश्वर (येहव) में विश्वास, अनुष्ठान एवं नैतिक नियमों का पालन किया जाता है। ईसाई धर्म ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है, जो एक ईश्वर में विश्वास एवं ईसा मसीह के द्वारा उद्धार करने एवं उनके द्वारा ही मोक्ष करने पर जोर देता है। इसी प्रकार इस्लाम भी पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं पर आधारित है, जो कि एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास एवं कुरान का पालन करने पर जोर देता है।

भारत में उत्पन्न विभिन्न धर्मों एवं मत पंथों में ईश्वर की अवधारणा विविध है, परंतु सेमेटिक धर्मों में केवल एक ईश्वर में ही विश्वास किया जाता है। भारतीय मत पंथों में कर्मकांड का महत्व कम है, जबकि सेमेटिक धर्मों में कर्मकांड की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारतीय मत पंथों में मोक्ष की प्राप्ति के विभिन्न मार्ग उपलब्ध हैं जिन पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है परंतु सेमेटिक धर्मों में मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर की कृपा से ही सम्भव है। भारतीय मत पंथों में विविध सामाजिक संरचना रहती है जबकि सेमेटिक धर्मों में एक समान सामाजिक संरचना रहती है एवं इसमें विविधता का अभाव है। भारत में उत्पन्न धर्मों एवं मत पंथों में तथा सेमेटिक धर्मों में सामाजिक संरचना एवं दर्शन भी अलग अलग है।

भारत के बारे में यह कहा जाता है कि यहां विविधता में भी एकता दिखाई देती है क्योंकि आज भारत में विभिन्न धार्मिक आस्थाओं एवं विभिन्न धर्मों की उपस्थिति तथा उनकी उत्पत्ति तो दिखाई ही देती है, साथ ही, व्यापारियों, यात्रियों, आप्रवासियों, एवं यहां तक कि आक्रमणकारियों द्वारा भी यहां लाए गए धर्मों को आत्मसात करते हुए उनका सामाजिक एकीकरण दिखाई देता है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिथ्य भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं, ह्हालांकि, वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर-हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहां सभी धर्म समान हैं।

पूरे विश्व में संभवतः केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता को समाज द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है। सनातन हिंदू संस्कृति में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय नागरिक स्वयं को किसी न किसी धर्म से सम्बंधित अवश्य बताता है। इसी के चलते, भारतीय नागरिक विश्व के किसी भी कोने में चला जाय परंतु अपनी संस्कृति को छोड़ता नहीं है। इसी कारण से यह कहा जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर आज की परिस्थितियों की बीच केवल भारतीय सनातन संस्कृति के माध्यम से ही पूरे विश्व में एक बार पुनः शांति स्थापित की जा सकती है।



भारत के जवानों के नाम

धरती पर जिनके पग पड़े, आकाश में जो उड़ते हैं,
वीर सपूत वे हमारे, जीवन से बढ़कर करते हैं।
हर दर्द को अपने सीने में छुपाकर,
देश के लिए अपना हर सपना तोड़ते हैं।
न कोई घर, न कोई सुख, न कोई ख्वाब,
इनकी नींदों में बसा केवल एक लक्ष्य है–
देश की धरती की हिफाजत करना,
हर युद्ध में अपनी शहादत को स्वीकार करना।
इनकी आँखों में हर सदी की गहरी सच्चाई है,
इनके दिलों में बसी हुई एक अदम्य वीरता है।
सैनिक वो नहीं, जो केवल गहनों से सजे होते हैं,
सैनिक वो हैं, जो पसीने में, लहू में डूबे होते हैं।
घर की चौखट को छोड़कर, ये सीमा पर रहते हैं,
कभी बर्फीले तूफानों में, कभी तपते रेगिस्तानों में,
फिर भी इनकी आत्मा में
किसी भी ठंडी रात का डर नहीं,
कभी न थकते, कभी न रुकते,
बस हर खतरे को हराते हैं।
इनकी छाती पर जो सितारे हैं,
वो हमारी शान का ऐलान करते हैं।
इनके कदमों में बसी है हमारी आस्था,
इनकी नजरों में हमारी पहचान है।
आओ ! हम सब इनकी महिमा गाएं,
हर युद्ध में इनकी जयकार करें।
इनकी शहादत को श्रद्धांजलि अर्पित करें,
और हर कदम पर इनकी वीरता को याद करें।

- डॉ सत्यवान सौरभ

भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिये काफी कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण हासिल किया

भारत-पाकिस्तान के बीच अकस्मात भड़के युद्ध और उसके बाद भारत द्वारा अप्रत्याशित ढंग से पाकिस्तान की, की गई ठुकाई के बीच अमेरिकी दबाव या सद्भावना वश किए गए युद्ध विराम यानी सीजफायर के अपने-अपने मायने निकाले जा रहे हैं। इस बात को लेकर भले ही भारतीयों में नाराजगी है, लेकिन भारत सरकार के इस सूझबूझ भरे फैसले से दोतरफा बबार्दी का मंजर टल गया है। हालांकि मोदी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध के बिल्कुल करीब पहुंच चुके भारत और पाकिस्तान के बीच भले ही सीजफायर समझौता हो गया हो, लेकिन आतंकवाद के खिलाफ जंग जारी रहेगी और निकट भविष्य में इसके किसी भी स्वरूप का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। यदि कोई भारतीयों पर गोली दागेगा तो उसका जवाब गोले से दिया जाएगा। यह आदेश भारत सरकार ने अपनी सेना और अर्द्धसैनिक बलों को दे दिया है।

वहीं, इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि युद्ध विराम के समझौते तक भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिये काफी कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण हासिल किया, जो उसके भविष्य में काम आएगी। मेरा स्पष्ट विचार है कि आप चाहे मोदी प्रशासन और ट्रंफ प्रशासन के ऊपर जितने भी आरोप लगा लें, लेकिन इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि भारत की तरह ही अब अमेरिका भी युद्ध नहीं विकास पर फोकस करना चाहता है ताकि चीन की अंतरराष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं पर काबू किया जा सके। इन नजरिये से भारत उसका महत्वपूर्ण सहयोगी है।

यही वजह है कि भारत के आक्रामक रवैये को देखकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत सरकार को आगाह किया कि यह दौर समझदारी से काम करने का है। क्योंकि से चीन तो भारत को भी रूस बनाना चाहता है और पाकिस्तान को यूक्रेन की तरह पिटवाना चाहता है। क्योंकि वह स्वयं तो युद्ध नहीं लड़ेगा लेकिन दोनों पड़ोसी देशों को आपस में उलझाकर रखेगा, ताकि भविष्य में ये उसे चुनौती देने लायक नहीं बचें। चूंकि डोनाल्ड ट्रम्प भारत को अपना भविष्य का सहयोगी मानता है और चीन के मजबूत विकल्प के रूप में देखता आया है, इसलिए ट्रम्प प्रशासन ने पाकिस्तान पर दबाव बढ़ाकर इतना सक्रिय सहयोग किया। इस बात में कोई दो राय नहीं कि कोई भी देश युद्ध में नहीं फंसना चाहता है, खासकर भारत भी नहीं, लेकिन हमारा दुष्ट पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान दुनिया का एक मात्र देश है जहाँ सेना देश के लिए नहीं बनी है बल्कि देश सेना के लिए बना है, ताकि आतंकवाद के फैक्ट्री के रूप में पाकिस्तान का इस्तेमाल होता रहे। ऐसे में चीन निश्चित ही पाकिस्तान को अपने प्रॉक्सी के तौर पर इस्तेमाल करके भारत को लंबे युद्ध में धकेलने के प्रयास में बना हुआ था, जिसे अमेरिका ने विफल कर दिया।

ऐसा इसलिए संभव हुआ, क्योंकि अमेरिका तो पाकिस्तान का पुराना सहयोगी है, जिसपर अब चीन अपना शिकंजा कसना चाहता है। मैंने पूर्व में भी कई बार लिखा है कि पहलगाम सांप्रदायिक आतंकी हमला सिर्फ पाकिस्तान की अकेले की साज़िश नहीं है, बल्कि यह चीन ने पाकिस्तान से करवाया है टैरिफ वार के अमेरिकी प्रकोप से बचने के लिए, ताकि भारत, पाकिस्तान से युद्ध करे और वे अमेरिकी कंपनियां जिन्हें ट्रम्प सरकार चीन से भारत शिफ्ट कराना चाहते हैं, वह डर जायें और चीन में ही बनी रहें।

हालांकि, पाकिस्तान तब खुलकर नंगा हो गया जब पाकिस्तानी रक्षा मंत्री ने अपने एक साक्षात्कार में स्वीकार कर लिया कि पाकिस्तान यूरोप और अमेरिका के कहने पर आतंकवाद को समर्थन देता आया है। दरअसल, इसके पीछे पाकिस्तान की चाल यह थी कि वह किसी भी तरह से चीन से ध्यान डाइवर्ट करना चाहता था और उसने बढ़ते आतंकवाद के लिए यूरोप और अमेरिका को आगे कर दिया। जो एक हद तक सही भी है, लेकिन हाल के संदर्भ में यह नीति भारत को लेकर बदल गई महसूस होती है।

यही वजह है कि भारत में लोग सवाल उठा रहे हैं कि आखिर हमें इस युद्ध से क्या मिला? जबकि इस्लामिक आतंकवादियों ने हिंदुओं का नाम पूछ-पूछ



कर मारा, मोदी को संदेश पहुंचाने तक को कहा, लेकिन हमने क्या किया? इसलिए अब यक्ष प्रश्न यह है कि पहले आप क्या कर रहे थे? शायद पहले हमलोग उन आतंकियों को खोजते थे जो घटना में शामिल होते थे और उनको न्यूट्रलाइज करते थे, पर फिर से आतंकियों की नई खेप तैयार हो जाती थी।

ऐसा इसलिए कि गरीब और मूर्ख मुसलमान बच्चा पैदा करने की फैक्ट्री हैं और आतंकियों के आका उनके बच्चों को बुलाकर मदरसे में दस साल तक ब्रेन वाश करके जितना आप मारते थे, उससे अधिक आतंकी खेप फिर से तैयार कर देते थे। लेकिन संभवतया अपने लोकतांत्रिक इतिहास में पहली बार भारत ने उन ठिकानों, उन लोगों और उन स्थानों को भी समाप्त किया है जहाँ से ये रक्तबीज राक्षस निकलते रहते हैं। पहली बार पीओके के अलावा पाकिस्तान के अंदर घुसकर ठुकाई की गई, जिससे पाकिस्तान दहशतजदा हो गया।

शायद पहली बार पाकिस्तान के घर में घुसकर वैसे ही उन निर्दोष बच्चों और उनके आकाओं का वध किया गया, जैसे उन्होंने कि अपने ब्रेन वाश से जांबाजी पूर्वक हमारे निर्दोष बहनों की माँग का सिंदूर उजाड़ दिया और उनके बच्चों को अनाथ किया। सवाल है कि आखिर कब आपने सुना था कि कोई दुनिया का दुर्दांत आतंकी कह रहा है कि अच्छा होता कि मैं मर जाता। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर की आक्रामकता के बाद पहली बार ये सुकूनदायक शब्द भारतीयों को सुनने को मिले, जो बहुत बड़ी बात है। देखा जाए तो इस बार भारत ने पाकिस्तान सहित आतंकी दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया है कि मैं अब आतंकवाद की नाभी पर हमला करूँगा और आतंकियों के बजाय आतंक की फैक्ट्री, उसके खानदान समेत उजाड़ी जाएगी। जबकि यह ठिकाने केवल पीओके के ठिकाने नहीं थे, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय सीमा से दूर पाकिस्तान के सबसे सुरक्षित क्षेत्रों में बने हुए आतंकी ठिकाने थे। इसलिए पाकिस्तान, उसकी सरकार और सेना सब दहशत में आ गए। यहां पर आपको यह समझना होगा कि चीन,भारत और पाकिस्तान के बीच लंबा युद्ध चाहता था, जबकि भारत कभी भी युद्ध नहीं चाहता था। लेकिन चीन की शह पर पाकिस्तान ने एक और युद्ध में जाने को भारत को मजबूर किया तो, भारत ने भी दस गुना ज्यादा और तगड़ा जवाब दिया। जो चीन और पाकिस्तान की कल्पना से परे था। यदि अमेरिका भारत और पाकिस्तान के बीच अचानक नहीं आया होता तो भारत का रौद्र रूप कुछ भी करवा सकता था।

यहां पर एक और बात गौर करनी होगी। भारत-पाक सीमित युद्ध 2025 से यह स्पष्ट हो चुका है कि अब तक जहाँ भारत को लग रहा था कि पूरा पाकिस्तान ही चीन की गोद में जा बैठा है, वहीं अब यह भी साफ हो चुका है कि पाकिस्तान को अमेरिका के उस प्रशासन के साथ भी बैठना होगा, जो प्रो इंडियन है और जिनके आने से भारत में फिर आंतरिक स्थिरता की बहाली सुनिश्चित हुई है। वैसे तो चीन ने बीते दिनों तक यह खलनायकी प्रयास किया है कि पाकिस्तान किसी तरह से अमेरिका के दबाव से निकले और इस युद्ध को जारी रखे। लेकिन यह ट्रम्प प्रशासन की अपनी कुशल रणनीति थी कि उन्होंने पाकिस्तान को भारत की शर्त पर सीजफायर के लिए मजबूर किया। ऐसा इसलिए कि इस सीजफायर में सिंधु नदी जल समझौता को बीच में नहीं लाया गया, टेररिज्म को एक्ट ऑफ वार से बाहर निकालने का दबाव नहीं बनाया गया और दोनों देशों के बीच किसी तीसरे देश की प्रत्यक्ष एंट्री नहीं कराई गई। इसलिए युद्ध विवाद के निष्पादन में भारत अमेरिका सहयोग के अलावा कुछ अन्य बातें काफी मायने रखती हैं, जिन्हें हमें जानना-समझना चाहिए। वह यह कि भारत ने बदला तो उरी आतंकी हमला और पुलवामा आतंकी हमला का बदला भी सर्जिकल स्ट्राइक करके लिया था। लेकिन इस बार की सर्जिकल स्ट्राइक ज्यादा तीव्र और घातक रही। इस दफे भारतीय सेना ने पाक अधिकृत कश्मीर ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान के पंजाब तक में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया, जिसमें 100 आतंकवादी मारे गए और पाकिस्तान के लगभग 4 दर्जन से ज्यादा सैनिक भी हलाक हुए।

वहीं, अब यह भी स्पष्ट हो गया कि भले ही भारत-पाकिस्तान के मामले में यह डर हमेशा से रहता आया है कि दोनों परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र हैं और इनके बीच का टकराव परमाणु युद्ध तक पहुंच सकता है। हाल के दिनों तक तो पाकिस्तान ने इस नैरेटिव को दुनिया में खूब बेचा और फायदा भी उठाया। लेकिन, पिछले एक दशक में इसमें और अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करने की भारत की सैन्य रणनीति में काफी बदलाव आया है। क्योंकि अब नया भारत एलओसी से भी नहीं हिचकता। इस बार तो सौ किमी अंदर तक घुसकर उसने एक नया ट्रेंड भी सेट किया, जो भारत की मजबूती को दशार्ता है। भारत का ऑपरेशन सिंदूर इस मायने में भी सफल प्रतीत हुआ कि भारत ने सिंधु जल संधि को निलबित कर रखा है। यह बात इसलिए भी अहम है, क्योंकि 1971 और कारगिल वॉर 1999 के दौरान भी संधि जारी रही थी। वैसे पिछले कुछ साल से भारत इस संधि की पुनर्समीक्षा करने की बात कह रहा है। लेकिन पानी के जरिये भारत ने पड़ोसी देश पर बड़ी कूटनीतिक बढ़त हासिल की है और उसे बेपानी कर दिया।

चर्चा है कि अभी तक तो भारत की कोशिश यही होती थी कि पाकिस्तान को सबूत सौंपकर रास्ते पर लाने की कोशिश की जाए, उस पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय का दबाव बनाया जाए। लेकिन इस बार पहलगाम आतंकी हमले के बाद नई दिल्ली ने दबाव तो बनाया, लेकिन उसके साथ ही खुद एक्शन लेकर दो टूक बता दिया कि उसके पास और भी विकल्प हैं, जिसे वो आजमाने में कभी नहीं हिचकिचाएगा। इस युद्ध विराम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि अब से हर आतंकी हमला एक्ट ऑफ वॉर माना जाएगा और यह पाकिस्तान के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। पाकिस्तान को इसके बाद अपने यहां के आतंकवादियों को कंट्रोल करना पड़ेगा। यदि पाकिस्तान ऐसा नहीं करता है तो भारत ने संकेत दिया है कि वह आगे भी पाकिस्तान के आतंकी नेटवर्क के खिलाफ कार्रवाई से पीछे नहीं हटेगा और युद्ध विराम के बाद अंतरराष्ट्रीय सीमा या नियंत्रण रेखा पर चलने वाली किसी भी गोली का जवाब गोले से देगा। क्योंकि इस सीमित युद्ध ने भारत की मॉडर्न वॉरफेयर क्षमता साबित हो चुकी है। भारत ने दुनिया को यह भी दिखाया कि उसका डिफेंस सिस्टम कितना मजबूत है। क्योंकि देश की उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर उसने पाकिस्तान के ड्रोन और मिसाइल हमलों को बुरी तरह से नाकाम किया और जबरदस्त पलटवार किया, जिससे पाकिस्तान की सेना को भारी क्षति पहुंची। एक और महत्वपूर्ण बात यह निकलकर सामने आई है कि, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान में आर्मी और चुनी हुई सरकार का अंतर्विरोध भी स्पष्ट रूप से सामने आ गया। इसलिए जब राजनीतिक नेतृत्व से बात नहीं बनी तो अमेरिका ने समझौते का दबाव बनाने के लिए पाकिस्तान के आर्मी चीफ से बात की। इन सबके बावजूद यदि आपको प्रतीत होता है कि पाकिस्तान को आप गाजा या यूक्रेन की तरह तबाह करेंगे तो शायद ऐसा होता नहीं है। क्योंकि गाजा के बीस-तीस किलोमीटर की पट्टी ने ही जब इजरायल को परेशान कर रखा है, वहीं पाकिस्तान बहुत विस्तृत व अप्राकृतिक देश है। भारत की सेना उसके नागरिकों पर हमले करती भी नहीं है। जबकि पाकिस्तान भारत को अस्थिर रखने के तमाम प्रयासों में शामिल है।

इस प्रकार से किसी बड़े युद्ध की तरफ जाना खास-ाकर तब जब भारत की आबादी अभी युवा है और अगले पंद्रह बीस साल में बुजुर्गियत की तरफ जाएगी, उचित नहीं है। इसलिए जब परिस्थिति हमें युद्ध की तरफ खिचेगी तो हम अवश्य लड़ेंगे लेकिन हम जबरदस्ती इसमें नहीं पड़ेंगे। इसलिए ट्रम्प प्रशासन धन्यवाद का अधिकारी है, चाहे हमें यह बात सुनने में अच्छा लगे या बुरा। पर सच, सच होता है। उसे समझने और स्वीकार करने से हिचकना नहीं चाहिए।

वास्तव में पाकिस्तान एक ऐसा नंगा देश है, जिसकी एक अपनी अलग दुनिया है जिसका वह एकमात्र सबसे बड़ा विजेता है। वह है आतंकवाद। दरअसल, वह जॉम्बी हैं, उनके दुनिया में वह सन 1971, 1999 और 2025 सभी युद्ध जीत चुका है। आप जॉम्बीज की दुनिया को अपने धारणा से नहीं चला सकते। इसलिए बेहतर होगा कि किसी प्रकार के भावावेश से बचें और अपने सशक्त व सजग नेतृत्व पर भरोसा रखें। क्योंकि वह दूर दृष्टि से प्रत्येक वह कार्य करेंगे जो उनके शायद जाने के बाद भी भारत को विकसित देश बनाने का कार्य करती रहेगी।

इस लिहाज से भी भारत-पाकिस्तान युद्ध और फिर सीजफायर का यह घटनाक्रम भारत के लिए ऐतिहासि-ाक महत्व वाला साबित हुआ है। इस दौरान भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब हम रक्तबीजों को नहीं बल्कि उसके फैक्ट्री चलाने वालों को मारेंगे। जैसे वो हमारे परिवार के निदोर्षों तक को मारते हैं वैसे ही तुम्हारा भी घर खानदान जड़मूल से समाप्त करेंगे। यह कोई साधारण बात नहीं है। इसके लिए मोदी सरकार का आभारी देशवासियों को रहना चाहिए। नहीं भी रहें, तो कम से कम चीन प्रेरित आलोचना से बचें।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।
संपादक: पंकज धर द्विवेदी
संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com